Valedictory References

माननीय अध्यक्ष **:** अब हम समापन की ओर बढ़ रहे हैं । कुछ दलों के नेता अपने-अपने विचार व्यक्त करेंगे ।

श्रीमती सुप्रिया सुले जी ।

SHRIMATI SUPRIYA SADANAND SULE (BARAMATI): Sir, I take this opportunity to thank the hon. Speaker, the Treasury Benches and the entire Opposition.

अध्यक्ष जी, ये पांच साल कैसे चले गए, पता ही नहीं चला । ऐसा लग रहा है कि कल ही रिजल्ट आया था और आज पांच साल इतनी जल्दी बीत गए । इसमें दो साल तो कोविड के कारण सबका ही नुकसान हो गया, लेकिन उससे उभर कर पांच साल में बहुत सारे नए रिश्ते, नई दोस्ती, और बहुत कुछ सीखने को मिला । जिस तरह आप और आपके पूरे ऑफिस ने काम किया, वह भी सराहनीय है । इन पांच सालों में कई बार झगड़े भी हुए, कभी आप हमसे नाराज, कभी हम आपसे नाराज, लेकिन रिश्ता बना रहा । मैं मेघवाल जी, प्रहलाद जोशी जी और स्पीकर साहब की पूरी टीम की बहुत-बहुत आभारी हूं । आपस में थोड़ी सी नोक झोंक, थोड़े हंसी मजाक में पांच साल सबके अच्छे निकल गए । हमारा यह बैच एक ऐसा बैच रहेगा जिसने पुरानी और नई बिल्डिंग, दोनों में काम किया है । उस बिल्डिंग में बहुत यादें हैं । जिन्होंने इस देश का इतिहास लिखा है और यह देश 70 सालों में विकास के जिस स्थान पर पहुंचा है, उसमें सबकी मेहनत रही है । Our entire fight for Independence and framing of Constitution by Dr. B.R. Ambedkar - हमारी सारी यादें उस बिल्डिंग में हैं और इस नई बिल्डिंग में हम आपकी छत्रछाया में आए, वे पुरानी यादें तो छूट नहीं रही हैं, लेकिन यहां धीरे-धीरे हम संभल रहे हैं ।

अध्यक्ष जी, मैं आप सभी का तहेदिल से आभारी हूं कि आप सबने हम सबका साथ दिया । मैं अपने क्षेत्र के सारे लोगों की बहुत आभारी हूं, पार्टी का आभार अभी नहीं मान सकती, क्योंकि पार्टी थोड़ी डाइलेमा में है । थोड़ी इधर है, थोड़ी उधर है । कोर्ट ही डिसाइड करेगा कि किसकी पार्टी होगी । वह समय बताएगा, जब हम अगली बार आएंगे लेकिन आप सभी का साथ रहना चाहिए । पॉलिटिकली लड़ाई तो चलती रहेगी, लेकिन हमारे रिश्तों में कभी अंतर और कटुता न आए, यही लोकतंत्र की सबसे अच्छी बात है । मैं स्पीकर साहब, सारी ट्रेजरी बैंचेज और विपक्ष के लोगों की आभारी हूं । सब हमारे दोस्त चुनकर आएं और इस देश को सशक्त करने के लिए और विकास में साथ देते रहें । इस साइड या उस साइड की बात नहीं, लेकिन हमारा देश बड़ा होना चाहिए । जय हिंद ।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री **(**श्रीमती अनुप्रिया पटेल**):** अध्यक्ष जी, नए संसद भवन में 17 वीं लोक सभा का यह अंतिम दिन है । हम लोगों के पांच साल कैसे गुजर गए, पता ही नहीं चला । किसी ने सही कहा है ?वक्त गुजरते वक्त नहीं लगता ।? जो वक्त हमने पुरानी संसद से लेकर**,** जिसे आज हम संविधान सदन

कह रहे हैं, वहां से लेकर यहां नई संसद में गुजारा वक्त हम सबकी यादों में कैद है । वर्ष 2024 के चुनाव परिणामों के बाद इस संसद की तस्वीर कैसी होगी, बदली होगी, हम इसके बारे में बहुत कुछ इस अवसर पर नहीं कहेंगे, लेकिन इतना जरूर कहेंगे कि हम सारे सांसद जिन्होंने संविधान सदन से लेकर इस नए सदन में अपने पांच सालों का वक्त बिताया है, वह हम सभी के लिए जीवन के अविस्मरणीय यादगार पल हैं, जो हमेशा के लिए हम सबकी यादों में कैद हो गए हैं । आज के इस अंतिम दिन पर मैं आपको हृदय-तल से आभार व्यक्त करना चाहती हूं । मेरी पार्टी की ओर से, हम दो सांसद हैं और हमारी छोटी-सी पार्टी है, हमारे दोनों सदस्यों की तरफ से आपको हृदय-तल से कृतज्ञता ज्ञापित करती हूं । आपका हमें स्नेह मिला, आशीष मिला, संरक्षण मिला । कभी-कभी थोड़ी डांट-फटकार भी मिली । एक अभिभावक के रूप में हमारा भी यह अधिकार है और आपका भी कि आपके स्नेह के साथ आपकी डांट, आपकी फटकार भी हम स्वीकार करें ।

अध्यक्ष जी, आपके अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में आपने अनेक अभिनव पहल सांसदों की कार्यकुशलता को बढ़ाने के लिए की हैं, खास तौर से जो सांसद पहली बार चुनकर आते हैं । आपके नए प्रयोगों से, आपकी नई अभिनव पहल से उनकी बहुत सहायता हुई । जब हम सदन में चुनकर आते हैं, यह हमारे लिए सौभाग्य तो है ही, लेकिन सौभाग्य से बढ़कर एक बहुत बड़ा दायित्व है । लाखों लोगों की अपेक्षाएं हमसे होती हैं और आपने उन अपेक्षाओं के अनुरूप उनकी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए हमें इस सदन में अवसर प्रदान किया है, उसके लिए मैं बहुत-बहुत आभारी हूं ।

अध्यक्ष जी, यह मेरा दूसरा कार्यकाल है । मेरी एक छोटी-सी पार्टी है । इस सदन में आकर मैंने बहुत सारे अनुभव प्राप्त किए । इस सदन में देश के तमाम राज्यों से बड़े-छोटे अनेक राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि चुनकर आते हैं । बहुत सारे वरिष्ठ सांसद हैं, जो इस संसद में अपने कई कार्यकाल पूरे कर चुके हैं । अलग-अलग विचारधाराओं को जानना, देश के कोने-कोने में रहने वाली जनता की अपेक्षाओं को समझना, उनके दृष्टिकोण को समझना, और अनेकों अनेक अनुभवी नेताओं के विचारों से लाभान्वित होना, यह एक ऐसा अनुभव है, जिसकी शब्दों में व्याख्या करना कठिन है । किन्तु, मेरे जीवन का यह सचमुच एक अविस्मरणीय कार्यकाल रहा । अब तो मैं इसे दस वर्ष कहूंगी । मैंने बहुत कुछ सीखा ।

महोदय, मैं आज इस अवसर पर अन्य राजनीतिक दलों के नेता, हमारे राष्ट्रीय दलों, क्षेत्रीय दलों के बड़े-बड़े नेता, जो यहां पर मौजूद हैं, जिनसे हमने बहुत कुछ सीखा है, उनके प्रति भी मैं अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूं । युवा सांसदों को संसद के अन्दर अपने मसले को कैसे सही ढंग से रखना है, इसे हमारे वरिष्ठ सांसद ही हमें सिखाते हैं । मैं उन सबके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूं ।

अध्यक्ष जी, वक्त दिखाई तो नहीं देता, लेकिन बहुत कुछ दिखा जाता है । सत्रहवीं लोक सभा में हमारी इस संसद ने सरकार के बहुत सारे ऐतिहासिक निर्णयों को भी देखा । अभी हाल ही में हमारे सदन ने एक बहुत ऐतिहासिक कार्य किया । आई.पी.सी., सी.आर.पी.सी., इंडियन एविडेंस एक्ट, जो अंग्रेजों की गुलामी के प्रतीक थे, वर्ष 1860 से उनका बोझ उठाए भारत के करोड़ों-करोड़ नागरिक चल रहे थे । हमसे पहले किसी सरकार ने यह चिंता नहीं की थी । मुझे गर्व है कि माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार ने इस ओर अपनी दृष्टि दौड़ायी । अंग्रेजों के जमाने से बने हुए इस कानून के उद्देश्य में भारत के नागरिकों को दंड देना प्राथमिकता थी, भारत के नागरिकों के साथ न्याय करना उनकी प्राथमिकता नहीं थी । उसको बदलने का काम इस संसद ने इस सत्रहवीं लोक सभा में की है ।

अध्यक्ष जी, जब हमने ?संविधान सदन? से अपने इस नए सदन में प्रवेश किया, तब भी हमारी सरकार ने एक इतिहास रचा । सालों से लम्बित इस देश की आधी आबादी को न्याय और भागीदारी सुनिश्चित कराने के उद्देश्य

से महिला आरक्षण विधेयक को पारित करने का काम हमारी एन.डी.ए. की सरकार ने प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किया और यह सदन उसका साक्षी है ।

अध्यक्ष जी, इस सत्रहवीं लोक सभा के कार्यकाल के दौरान हमने भयावह त्रासदी को देखा, कोविड-19 को देखा । मुझे गर्व है कि जब पूरी दुनिया कोविड-19 की महामारी से जूझ रही थी, उस वक्त भारत ने ?वसुधैव कुटुम्बकम? की अपनी भावना को सर्वोपरि रखते हुए ?वैक्सीन मैत्री? इनिशिएटिव के अन्तर्गत 100 से अधिक देशों को वैक्सीन और दवाएं सप्लाई करने का काम किया । यह सब कुछ सत्रहवीं लोक सभा के कार्यकाल में हमने देखा ।

महोदय, यह सत्रहवीं लोक सभा बहुत सारे ऐतिहासिक निर्णयों की साक्षी रही । मैं इस अवसर पर एक और चिंता को व्यक्त करना चाहती हूं । एक युवा सांसद, युवा मंत्री के रूप में सदन का एक-एक क्षण मूल्यवान होता है । करोड़ों-करोड़ लोगों की अपेक्षाओं के साथ हम इस सदन में चुनकर पहुंचते हैं और एक-एक क्षण जब हंगामे की भेंट चढ़ता है, जिसका उपयोग सार्थक चर्चाओं के लिए होना चाहिए, जिसका उपयोग जन भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए होना चाहिए, तो हमारे जैसे युवा सदस्यों को कष्ट होता है । यह अवसर बार-बार नहीं मिलता । बहुत कम लोग इतने सौभाग्यशाली होते हैं जो अनेक बार चुनकर आते हैं । लेकिन, जो एक या दो बार चुनकर आते हैं, उनके लिए पाँच सालों में एक-एक क्षण की कीमत होती है ।

16.00 hrs

अध्यक्ष महोदय, मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि कम से कम 18 वीं लोक सभा में, विभिन्न राजनैतिक दलों के जो भी सदस्य यहां चुन आए हैं, हम सबकी यह कोशिश होनी चाहिए कि सदन के एक-एक क्षण का सदुपयोगा हो । सदन को हंगामे की भेंट चढ़ाने से बेहतर है कि सरकार को कटघरे में खड़ा किया जाए । सरकार से सवाल पूछे जाएं । मीडिया की हेड लाइन यह बने कि सदन की कार्रवाई स्थगित हो गई, सदन नहीं चला, इससे बेहतर यह हो सकता है कि सरकार विपक्ष के उक्त सवाल से असहज हो गई । यह शायद एक बेहतर हेडलाइन हो सकती है । यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिस पर सभी दलों को सामूहिक रूप से मंथन करने की जरूरत है और जो हमारी संसदीय परंपराएं पटरी से उतर गई हैं, उनको पुन: पटरी पर लाने की जरूरत है और इसके लिए सामूहिक चिंतन और सामूहिक संकल्प की आवश्यकता है । अध्यक्ष महोदय, मैं इतना ही कहना चाहूंगी कि पांच सालों के लिए जब हम यहां आते हैं तो लाखों लोगों के प्रति हमारी जवाबदेही होती है । इसलिए जब हम अपने समय का उपयोग सार्थक चर्चाओं के लिए करते हैं, जनता से जुड़े हुए उनके हित के मसलों को उठाते हैं, तो हम अपने उस दायित्व के साथ न्याय कर पाते हैं ।

अध्यक्ष महोदय, जब सदन में प्रश्न काल चलता है, कई बार हमने देखा है कि प्रश्न काल भी हंगामें की भेंट चढ़ गया । मैं आज 17 वीं लोक सभा के अंतिम दिन अपनी भावना इस गरिमामयी सदन के सभी सदस्यों के बीच रखना चाहती हूँ कि अगर सदन में हंगामे पूरी तरह खत्म नहीं हो सकते तो कम से कम यह संकल्प जरूर होना चाहिए कि प्रश्न काल किसी भी कीमत पर स्थगित न हो, क्योंकि प्रश्न काल एक ऐसा समय होता है, जो मंत्री से ले कर, विभाग के, मंत्रालय के छोटे-बड़े हर अधिकारी के माथे पर चिंता की लकीरें लाने का काम कर सकता है । मैं तो समझती हूँ कि विपक्ष के पास सबसे बड़ा हथियार प्रश्न काल है । सरकार देश की जनता के प्रति जवाबदेह होती है । सरकार और बेहतर काम करे इसका भी बहुत बड़ा हथियार प्रश्न काल है । इसलिए कम से कम 18 वीं लोक सभा में हम सभी को यह चिंता जरूर करनी चाहिए कि प्रश्न काल स्थगित न हो । मुझे नहीं मालूम कि मेरी इस बात से कितने लोग सहमत होंगे, किंतु यह मेरी भावना थी, जो मैं निष्पक्ष रूप से व्यक्त कर रही हूँ ।

अध्यक्ष महोदय, मैं पुन: इस अवसर पर आपको धन्यवाद देती हूँ, आपका आभार व्यक्त करती हूँ । आपके मार्गदर्शन में हम सभी को इस गौरवशाली सदन में अपनी बात रखने का अवसर मिला ।

धन्यवाद ।

श्री रितेश पाण्डेय (अम्बेडकर नगर): आदरणीय अध्यक्ष जी, 17 वीं लोक सभा का यह अंतिम दिन और कुछ अंतिम क्षण हैं । मेरे लिए यह लोक सभा अत्यंत ही अविस्मरणीय समय रहा है । इन पांच सालों में आपके मार्गदर्शन में बहुत कुछ सीखने को मिला । इतनी देर तक कभी सदन चलता था, मैं विधान सभा में भी रहा हूँ, ऐसा मैंने नहीं देखा था । अभी अनुप्रिया जी और सुप्रिया जी ने बातें रखीं कि बड़े-बड़े मुद्दों पर, जैसे महिला आरक्षण बिल, उसके साथ-साथ धारा 370 हटाई गई, ये तमाम बड़े मुद्दे, जो बाबा साहब बी.आर. अंबेडकर जी ने कहा था कि एक देश और दो अलग-अलग निशान नहीं रह सकते, इन सारी चीज़ों को हटाया गया । बड़े मुद्दों पर चर्चा हुई । हम लोगों को यहां से बहुत कुछ सीखने को मिला ।

अध्यक्ष महोदय, आपके संरक्षण में हमने, यहां पर तमाम उन बेहतरीन क्षणों को याद करना पड़ेगा, चाहे वह पुराने सदन में रहा हो, चाहे अब इस नए सदन में । मैं हरेक चीज़ के लिए, यहां पर हमारे सत्ता पक्ष के सदस्यगण, विपक्ष के हमारे जितने साथी हैं, उन सभी का मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ । हम लोग पहली बार इस लोक सभा में आए थे, कम उम्र में आए हैं । सबने अंगुली पकड़ कर इस सदन में यहां की जो परिपाटी रहती है, उसको समझाया-सिखाया । हम लोगों का भाईचारा सदन के अंदर ही नहीं, बल्कि पूरे देश में आप कहीं पर भी चले जाते हैं, तो सांसदों का, उनके क्षेत्र में जो बल मिलता है, उससे भी बहुत सारी समस्याओं का समाधान हो जाता है ।

इसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूं । अंत में, मैं एक शेर कहूंगा, क्योंकि हम सभी लोग चुनाव में जा रहे हैं । जाहिर सी बात है कि हम में से हो सकता है कि कुछ लोग दोबारा न आएं । मैं चाहता हूं कि सभी लोग वापस चुन कर आएं । हम सभी के लिए एक शेर है-

सबको मिल जाएगी मंजिल यह जरूरी तो नहीं

जिंदगी राह सफर हैं, यूं ही चलते रहना

तुम चिरागों की तरह राह में जलते रहना

हर अंधेरे को उजालों में बदलता रहना ।

अध्यक्ष जी, आपके नेतृत्व में 17 वीं लोक सभा के अंतर्गत हम लोगों को अपने आप में निखारने का अवसर मिला है । यहां पर हमारा जो स्टाफ बैठा है, जिनके जरिए हम लोगों को तमाम अवसर मिलें, उन्होंने भी उंगुली पकड़ कर हमें गाइड करने का काम किया है, मैं सभी को धन्यवाद देता हूं । यह मेरे लिए अपने जीवन का एक बहुत ही अविस्मरणीय समय रहा है । मुझे पूरी उम्मीद है कि हम सब पुन: 18 वीं लोक सभा में इसी सदन में मिलेंगे और अपने-अपने मुद्दों को लेकर मजबूती से संघर्ष करेंगे । मैं अंबेडकर नगर की जनता के लिए और आप सभी अपने-अपने क्षेत्र की जनता के लिए पूरी ताकत से लड़ने का काम करेंगे । इसीलिए, हमें यहाँ चुनकर भेजा जाता है, ताकि हम अपनी जनता-जर्नादन का एक अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व कर सकें और उनके हक-हकूक की लड़ाई देश की सबसे बड़ी पंचायत, लोक तंत्र के सबसे बड़े मंदिर में पूरी ताकत से लड़ने का काम करें ।

इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहता हूं । मैं अपने सभी साथियों को भी धन्यवाद देना चाहता हूं । लोक सभा के हमारे जो कार्यरत साथी हैं, उनको भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद । जय भीम-जय भारत ।

श्री प्रिंस राज **(समस्तीपुर) :** अध्यक्ष महोदय, आज आखिरी दिन मुझे बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । जब मैं इस 17 वीं लोक सभा का सदस्य बनकर आया और जब मेरी मेडेन स्पीच हो रही थी, उस वक्त भी आप चेयर पर थे और आज भी हैं । मैंने अपने प्रथम भाषण में बताया था कि मुझे इस सदन में कैसा अनुभव मिला । जब हमारे परिवार के लोग, दोस्त और कई सारे लोग मुझसे पूछते थे कि जब आप सांसद बन कर गए तो सदन में कैसा अनुभव रहा । मैंने पहली स्पीच में कहा था कि मेरा अनुभव बिल्कुल उस एक नए विद्यार्थी की तरह रहा, जब वह स्कूल की नई कक्षा में जाता है । जब वह बैठता है तो देखता है कि बाएं हाथ एवं दाएं हाथ में जो उसके साथी होते हैं, कोई पढ़ने में अव्वल होता है, कोई नटखट होता है, कोई शरारती होता है, कोई दूसरे को पढ़ने नहीं देता है, इस तरह क्लास में कई तरह के बच्चे होते हैं, उसी तरह से यह सदन भी हमें अनुभव देता है । जहां एक तरफ हमारे मंत्रिमंडल के साथी बैठते हैं, काफी अनुभवी लोग बैठते हैं और दूसरी तरफ, हमारे विपक्ष के साथी बैठते हैं । कई ऐसे भी होते हैं, जो चुपचाप बैठते हैं, किसी चीज में पार्टीसिपेट नहीं करते हैं । वे चुपचाप सुनते हैं और अनुभव लेते हैं । इस तरीके का अनुभव हमारा रहा है ।

महोदय, यह तो हमारे सौभाग्य की बात कहिए, फख्र की बात कहिए कि ऐसे वक्त में हमें सदन का सदस्य बनने का मौका मिला है, जब सदन ने इतने ऐतिहासिक निर्णय लिये हैं, इसमें स्वदेशी संसद का निर्माण हुआ, अनुच्छेद 370 हटाई गई, ट्रिपल तलाक जैसे चीजों को हटाया गया । कोविड के दौरान स्वदेशी वैक्सीन बनी, महिला आरक्षण पर अहम निर्णय लिया गया और उसका हिस्सा बनने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ । यहां सभी माननीय सदस्यों के साथ बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । मैं सभी को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं । आप सभी हमारे सीनियर सदस्य हैं और अभिभावक भी हैं । आप सभी का मेरे ऊपर आशीर्वाद रहा है । आपने हमें गाइड किया, रास्ता दिखाया कि सदन में कैसे बोलना चाहिए, व्यवहार कैसा रखना चाहिए, सदन की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए । यहां हमारे कई दोस्त भी बने हैं । कई सदस्यों का मुझे साथ मिला और कई सदस्यों का प्यार मिला । यहाँ पार्लियामेंट के जितने भी स्टाफ्स हैं, उनको भी मैं धन्यवाद देना चाहूंगा । इनसे भी एक घरेलू संबंध बन जाता है । वे भी हमारे घर आते हैं और हम उन्हें आमंत्रित करते हैं । इससे एक पारिवारिक वातावरण बन जाता है । मैं अपने माननीय सदस्या सुप्रिया सुले जी का समर्थन करता हूं ।

उन्होंने कहा कि मतभेद राजनीतिक होना चाहिए, व्यक्तिगत नहीं होना चाहिए । हम इसका बिल्कुल समर्थन करते हैं और हम भी इसी विचारधारा पर चलते हैं कि आपका जो भी मतभेद है, वह राजनीतिक होना चाहिए । व्यक्तिगत सम्बन्ध अलग होता है और हमें लगता है कि व्यक्तिगत सम्बन्ध हमने यहां पर सबके साथ बनाया है, सबके साथ जुड़ाव बना है । इस सदन का यह आखिरी दिन है, काफी भावुक क्षण है । हम अपने अध्यक्ष महोदय जी को धन्यवाद देते हैं । आपसे जब मुलाकात होती थी, आप अक्सर हमें मोटीवेट करते थे और कहते थे कि सदन में कुछ बोलो । चीजें सीखते-सीखते हम लोग आगे बढ़े और हौसला बढ़ा । जिस तरीके से देश हित में हम लोगों ने अपने मुद्दे उठाए, जन हित में अपने मुद्दे उठाए, हमें पूर्ण विश्वास है कि जो नया सदन बना है, उससे कई और कीर्तिमान स्थापित किए जाएंगे । अंत में, मैं समस्तीपुर लोक सभा क्षेत्र को रिप्रेजेंट करता हूं । मैं वहां की जनता को तहे-दिल से धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने अपने आशीर्वाद से मुझे इस सदन का हिस्सा बनने का मौका दिया । आप सभी, 200 पार होने के बाद जितने बचते हैं, आप लोग दोबारा आएं और इस सदन का हिस्सा बनें

। इन्हीं चंद बातों के साथ मैं आप सभी को धन्यवाद देता हूं, सभी को शीश झुकाकर नमस्कार करता हूं, प्रणाम करता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद, जय हिंद ।

श्री राहुल रमेश शेवाले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): अध्यक्ष महोदय, 17 वीं लोक सभा के अंतिम सत्र का आज अंतिम दिन है और आज अंतिम दिन के अवसर पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया है, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, स्पीकर के नाते आपने सभी को न्याय देने का काम किया । मैं बताना चाहता हूं कि हर बार आपने मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत सहयोग किया, मार्गदर्शन किया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं । इस लोक सभा में आने के पहले हम एनडीए के माध्यम से चुनाव लड़े थे और एनडीए के माध्यम से हम सभी सांसद चुनकर आए थे । लेकिन दुर्भाग्य से हमारे नेतृत्व ने लोक सभा चुनाव के बाद अलग निर्णय लिया और महाविकास अघाड़ी को जॉइन किया । हम एनडीए के माध्यम से चुनकर आए थे और राज्य में महाविकास अघाड़ी के साथ शामिल हुए, उस वक्त से ही हमें वह निर्णय पसंद नहीं था । बाद में महाराष्ट्र राज्य के मुख्यमंत्री आदरणीय एकनाथ शिंदे साहब ने एक बार फिर एनडीए जॉइन करने का निर्णय लिया । हमने बाला साहब ठाकरे जी के विचारों को आगे लेकर जाने का निर्णय लिया था । हमें पूर्णत: विश्वास है कि माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी बाला साहब ठाकरे जी के विचारों को आगे लेकर जाने में पूरा सहयोग करेंगे और बाला साहब ठाकरे जी का सपना पूरा करने का काम करेंगे । वह विश्वास उन्होंने पूरा करके दिखाया । अनुच्छेद 370 को रद्द करने का जो बाला साहब ठाकरे जी का सपना था, वह उन्होंने किया । अयोध्या में भव्य श्री राम मंदिर का निर्माण करने का बाला साहब ठाकरे जी का सपना भी उन्होंने पूरा किया । मुझे बहुत ही आनंद है कि हमने माननीय मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे साहब जी के नेतृत्व में जो निर्णय लिया, उस निर्णय में हमें सफलता आई । 17 वीं लोक सभा हमारे लिए एक ऐतिहासिक लोक सभा है । शिवसेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे जी का सपना पूरा करने के लिए पांच साल का कार्यकाल भी यह लोक सभा है । हम खुद को भाग्यशाली समझते हैं कि हमें पुराने लोक सभा भवन में भी भाषण करने का मौका मिला और अभी नए लोक सभा भवन में भी भाषण करने का मौका मिला । जो पुरानी लोकसभा है, वहां का एक अलग इतिहास है । नई लोक सभा में आपने पूरा माडर्नाइजेशन करके आधुनिक तंत्रज्ञान के माध्यम से सदस्य को कैसे सहयोग मिलेगा, इसका आपने पूरा इंप्लीमेंटेशन यहां पर किया, पेपरलेस सिस्टम यहां पर शुरू किया, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूं । पांच साल के कार्यकाल में अनुच्छेद 370, महिला आरक्षण का नारी सम्मान का विधेयक, अपनी अर्थव्यवस्था आज पांचवें रैंक पर है इसका और एनडीए के माध्यम से हमने लोगों को जितने भी वचन दिए थे, सभी वचनों की पूर्ति की है ।

मैं एक बार फिर आपको धन्यवाद देता हूं और शिवसेना पार्टी की तरफ से आपको धन्यवाद देता हूं । मैं सभी सदस्यों को आने वाले लोक सभा चुनाव की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं । साउथ सेंट्रल मुंबई के मतदाता, जिन्होंने मुझे यहां चुनकर भेजा, इसके लिए मैं उनको भी धन्यवाद देता हूं ।

श्री अनुभव मोहंती (केन्द्रपाड़ा): अध्यक्ष महोदय, आज सत्रहवीं लोक सभा का अंतिम दिन है, बीजू जनता दल की तरफ से, मेरे नेता नवीन पटनायक, मेरी पार्टी के सभी सांसदों की तरफ से और फ्लोर लीडर पिनाकी जी की तरफ से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं । जिस तरह से आपने सभी को बोलने का मौका दिया, सत्रहवीं लोक सभा के पांच साल कैसे बीत गए, पता भी नहीं चला । आपने इतने अच्छे से सभी को बोलने और भाग लेने

में मदद की, आपने बहुत आशीर्वाद भी दिया है । उसके साथ-साथ, सदन के लीडर ऑफ द पार्टी, लीडर ऑफ द हाउस माननीय प्रधानमंत्री जी, लीडर ऑफ अपोजिशन और लोक सभा में उपस्थित सभी पार्टी के लीडर को धन्यवाद देना चाहूंगा ।

लोक सभा सचिवालय के सभी सदस्यों, लोक सभा के सेक्रेटरी जनरल, सिक्योरिटी डिपार्टमेंट, मीडिया, रिपोर्टर्स और जनर्लिस्ट, सभी को धन्यवाद । पुरानी पार्लियामेंट बिल्डिंग से लेकर नये पार्लियामेंट बिल्डिंग तक जो हमारा यह सफर ऐतिहासिक रहा । हमने इतने ऐतिहासिक बिल पास होते हुए यहां देखा । चाहे ट्रिपल तलाक की बात हो, धारा 370 हटने की बात हो, वूमेन रिजर्वेशन की बात हो, जो ब्रिटिश लॉज थे, आजादी के इतने सालों बाद पहली बार सारे लॉज को हटाकर हमारे देश में हिन्दुस्तानी लॉज आए, यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है ।

कई सेशन्स ऐसे भी रहे हैं, जिसमें बहुत सारी तैयारी करके आते हैं । हमें लाखों लोग वोट देकर जीताते हैं, बहुत आस्था रखते हैं, बहुत उम्मीद रखते हैं कि हम इधर आकर उनकी आवाज उठाएं । कई बार तैयारी से आने के बाद भी, आपकी अच्छी कोशिश के बावजूद भी सदन डिसरप्ट होता है तो उससे बड़ी दिक्कत होती है, दिल को ठेस पहुंचती है । जनता को इसके माध्यम से जो मैसेज पहुंचता है**,** खासकर युवा और छोटे बच्चों को जो गैलरी में आकर बैठते हैं, स्कूल के छोटे बच्चे-बच्चियां उनके सामने भी हम इस तरह के व्यवहार करेंगे तो बड़ा दुख लगता है ।

आज के दिन इस बारे में ज्यादा चर्चा न करते हुए इतनी उम्मीद रखूंगा कि आगे चलकर 18 वीं और 19 वीं लोक सभा, जितनी भी इतिहास में आती रहेंगी, आगे चलकर इतिहास बनेंगे, उसके लिए मैं सभी से अनुरोध करना चाहूंगा, संसद कैसे अच्छे से चले, डिबेट हो, डिस्कशन हो, कलैक्टिव एफर्ट सबकी लगे, मेरी पार्टी हमेशा विश्वास करती है कि कोई वेल में न आए, हम हमेशा डिबेट और डेलिब्रेशन्स में यकीन रखते हैं ।

मैं अपने नेता नवीन जी को धन्यवाद देता हूं । बीजू जनता दल के सभी नेता और कार्यकर्ता जिन्होंने हमें यहां चुन कर भेजा, मैं केन्द्रपाड़ा वासियों को धन्यवाद देना चाहूंगा । ओडिशा के सारे लोग जो हमसे इतनी उम्मीद रखे हैं, मैं सभी को विश्वास दिलाना चाहूंगा कि आने वाले वक्त में भी हम उतनी ही मेहनत और शिद्दत से काम करेंगे, जितनी मेहनत और शिद्दत से आज तक काम करते आए हैं ।

कोविड-19 हम सभी के लिए एक उदाहरण था । हमने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका सामना करना पड़ेगा । जिस हिम्मत और साहस से उसका सामना किया और हिन्दुस्तान आज पूरे विश्व में अपना नम्बर वन स्थापति कर पाया, इसके लिए मैं सभी सांसदों, माननीय प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्री नवीन जी को धन्यवाद देना चाहूंगा । भगवान महाप्रभु श्री जन्नाथ का आशीर्वाद सभी पर बना रहे, सभी को लंबी उम्र मिले ।

अंत में, मैं आपकी इजाजत से एक छोटी सी कविता पढ़ना चाहूंगा जो युवा सांसद यहां आते हैं, सभी से सीखते हैं, सीखने के लिए साथ मुझे क्रिकेट खेलने का भी मौका मिला है । जो वक्त हमने साथ बिताया है, उसे भूल नहीं सकते । यह हम सबके लिए बहुत भावुक पल है । खासकर मेरे लिए पहली बार लोक सभा में चुनकर आने का अहसास रहा, आप लोगों का आशीर्वाद रहे, अच्छा काम करूं । नेता अच्छा बनूं या न बनूं, अच्छा इंसान बनकर इस दुनिया को छोड़ू, यह आपका आशीर्वाद रहे, अच्छा इंसान होने के नाते जाना जाऊं ।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,

और चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है ।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,

चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है ।

आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं जाती,

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती ।

महोदय, मैं सभी को हृदय से प्रणाम करते हुए धन्यवाद देते हुए आशीर्वाद की प्रार्थना करता हूं । बीजू जनता दल हमेशा कलेक्टिव एफर्ट्स में विश्वास रखती आई है और आगे भी रखती रहेगी । जय जगन्नाथ, जय हिंद ।

श्री सुनील कुमार पिन्टू (सीतामढ़ी): माननीय अध्यक्ष जी, जनता दल यूनाइटेड के 16 मैम्बर्स आपके प्रति कृतज्ञ हैं । हम माननीय नीतीश जी को धन्यवाद देते हैं कि हम सब में से कुछ सदस्यों को पहली बार सदन में आने का मौका दिया ।

माननीय अध्यक्ष जी, माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में हम 17 वीं लोकसभा के सदस्य बने । माननीय प्रधान मंत्री जी, माननीय मुख्यमंत्री जी और आपके सौजन्य से इतिहास में हमारा नाम दर्ज हुआ क्योंकि हम पुराने सदन में आखिरी मैम्बर थे और नए सदन में पहले सदस्य के रूप में अपने क्षेत्र की जनता की आवाज़ बन सके ।

महोदय, मैं मां सीता की प्रकट स्थली सीतामढ़ी से आता हूं । मैं आपके माध्यम से सीतामढ़ी की जनता को सादर प्रणाम करता हूं कि उन्होंने मुझे मौका दिया कि मैं आपके समक्ष अपने क्षेत्र की समस्याओं को उठा सकूं और आपके माध्यम से सरकार से अपने क्षेत्र का विकास करा सकूं या उनकी समस्याओं का समाधान करा सकूं । हमें यह मौका आपके माध्यम से ही मिला है ।

महोदय, जब हम सदन में आए थे, तब हम जीरो ऑवर में लॉटरी में अपना नाम नहीं पाते थे और हमारा नाम क्वैश्चन ऑवर में भी नहीं आता था । उस समय आपके प्रति थोड़ी नाराजगी होती थी, तब हमें लगता था कि अध्यक्ष जी, हमारे साथ कुछ भेदभाव कर रहे हैं । हम आपको धन्यवाद देते हैं कि आपने हमें शाम को एक्स्ट्रा ऑवर में अपने क्षेत्र की समस्याएं उठाने का मौका दिया । अपनी बात कहने का मौका देने के लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं कि देर शाम तक ही सही, हमें अपने क्षेत्र की समस्याएं उठाने का मौका मिला । इस सबके कारण ही हमारे क्षेत्र की समस्याओं का निदान हो सका क्योंकि सरकार ने संज्ञान लेकर कुछ काम किया ।

महोदय, मैं आपके प्रति, लोकसभा सचिवालय और सुरक्षाकर्मियों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूं । मैं आपसे और सदन के सभी लोगों से कहना चाहता हूं कि माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में जब हमारे क्षेत्र की जनता 18 वीं लोकसभा में हमें चुनकर भेजेगी तो जिस प्रकार से हम 17 वीं लोकसभा में आर्टिकल 370, ट्रिपल तलाक, महिला आरक्षण और राम मंदिर के गवाह बने हैं, उसी तरह से हम 18 वीं लोकसभा में सीता जी के भव्य मंदिर के गवाह बन सकें, हम सब इस सदन में उनके नाम पर संकल्प लें ।

महोदय, मैं एक बार पुन: हमारे नेता आदरणीय नीतीश कुमार जी और माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति आभार व्यक्त करता हूं । मैं माननीय अध्यक्ष जी के प्रति स्पेशल आभार प्रकट करता हूं कि हम सबको इस सदन में सीखने और अपने क्षेत्र की आवाज बनकर बोलने का अवसर दिया ।

महोदय, मैं मां सीता से यही प्रार्थना करूंगा कि यहां मौजूदा सभी सदस्य दोबारा आएं और इसी प्रकार लोकतंत्र के मंदिर में जनता की आवाज़ बनें और सरकार के माध्यम से अपने क्षेत्र की समस्याओं का निदान कराएं ।

मैं आपका कृतज्ञ हूं और मैं आपके प्रति दोबारा धन्यवाद ज्ञापित करता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

SHRI MAGUNTA SREENIVASULU REDDY (ONGOLE): Thank you very much, Sir, for giving me some time to speak.

This is an auspicious occasion for me to speak on this subject. When I entered into the 12th Lok Sabha, I felt very happy. That was about 26 years back. It is the temple of democracy. There are 140 crore people in this country. There are only 543 Members in this House. I feel proud that I am one amongst them. I should be thankful to the God always. The 17th Lok Sabha is now coming to an end. There will be the 18th Lok Sabha soon. Everybody expects that after getting elected and coming here to this Parliament, we have to come again. For that, God?s blessings are required.

You are a lovely Speaker, always smiling Speaker. I have not come across someone like you in my life. I have seen so many Speakers. We should be proud of that also. You were not angry any time. You look so cheerful. You encouraged all the Members to speak here in this House. That is a grateful thing.

Sir, I must appreciate our hon. Prime Minister how he has conducted affairs and he has actually brought India into the world map during the COVID-19 period. People should always remember it. Everybody praises India because our hon. Prime Minister has done so much of work during the COVID-19 period. But some Members used to say that due to COVID-19 two years were lost, that they have lost MPLADS also. Their feeling is why do you not extend the 17th Lok Sabha by another two years. You may have to bring some new legislation for this. We have to look into how we can recover lost things.

Sir, it is a grateful event. To tell you frankly, our Parliament staff, especially, security staff and marshals, and everybody were all cooperative. We have worked like a family in this Parliament. The greatest opportunity for this 17th Lok Sabha?s Members is the shift from old Parliament to new Parliament. Nobody will have this kind of an experience later because everybody has to continue from here in this new Lok Sabha.

Sir, there is no Central Hall here. That is the experience we had there earlier. I request you once again to create a Central Hall here. Otherwise, people are not connecting themselves. We have to call in the morning and ask them that at what

time we should meet in Rajya Sabha canteen or Lok Sabha canteen. So, the feeling of everybody is that a Central Hall has to be created. In these five years of Lok Sabha period, the Government has brought a lot of valuable Bills also. I must thank our hon. Prime Minister for that. He has done a wonderful thing. My leader also, Y.S. Jagan Mohan Reddy garu always used to say that we have got an excellent Prime Minister for our country. Then, there is Ayodhya Rama Temple. People from South, everybody is saying that Modi ji has created a wonderful Rama Temple. People have started visiting the temple also.

Sir, it was a good experience in the 17th Lok Sabha under your Speakership. I cannot forget this in my lifetime. I actually compliment my colleagues and everybody. When we used to meet outside the Parliament also generally, like a family we used to celebrate very happily everything.

With God?s blessings and with your affection, everybody should come back to the 18th Lok Sabha. This is my only prayer to the God.

Thank you, Sir.

श्री वीरेन्द्र सिंह (बलिया): अध्यक्ष महोदय, यह संसद की अंतिम बैठक है । भारत सरकार के माननीय प्रधान मंत्री जी ने जो फैसला किया है, उसके लिए मैं उनकी सरकार को और उनको प्रणाम करता हूं । उन्होंने चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न दिया है । वे एक किसान नेता थे । स्वामीनाथन, जिन्होंने भारत को कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाया, उनको भी ?भारत रत्न? दिया है । मैं उनको भी प्रणाम करता हूं । आज मुझे पिछली संसद के मेरे साथी मुलायम सिंह जी याद आ रहे हैं । उन्होंने पिछले सत्र में कहा था कि मोदी जी को पुनः प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए । अगर आज वह संसद में होते, तो वे पुनः इस बात को दोहराते कि मोदी जी को पुनः इस देश का प्रधानमंत्री बनाया जाना चाहिए । वह संसद में भले ही नहीं हैं, लेकिन स्वर्ग से माननीय मुलायम सिंह जी कहते होंगे कि भारत का प्रधानमंत्री पुनः मोदी जी को इसलिए बनाया जाना चाहिए, क्योंकि चौधरी चरण सिंह साहब जी किसान नेता थे, मुलायम सिंह जी जिनके शिष्य थे, उनको ?भारत रत्न? दिया गया है ।

स्वामीनाथन जी ने कृषि के क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बनाया था, उनको भी ?भारत रत्न? दिया जा रहा है । इसलिए मैं प्रधानमंत्री जी और उनकी सरकार को प्रणाम करता हूं । मैं अपने साथी मुलायम सिंह जी को भी बहुत-बहुत बधाई देता हूं । वह दिवंगत हो गए, लेकिन वे स्वर्ग से भी यह पुकार कर रहे हैं कि मोदी जी को पुनः इस देश का प्रधानमंत्री बनना चाहिए ।

श्री बी. बी. पाटील (जहीराबाद) : अध्यक्ष महोदय, 17 वीं लोक सभा के आखिरी दिन के अवसर पर मैं सबसे पहले हमारे आदरणीय भूतपूर्व मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं । उसी के साथ ही साथ मैं माननीय प्रधानमंत्री जी, केन्द्र सरकार के सभी मंत्रिगण और सभी मेंबर्स को भी धन्यवाद देना चाहता हूं ।

पिछले पांच साल के कार्यकाल में हम सब लोगों ने मिलकर कई ऐतिहासिक काम किए हैं । 17 वीं लोक सभा एक यादगार लोक सभा होगी और हम इसको याद रखेंगे । आने वाले दिनों में इससे भी अच्छे काम लोक सभा में होंगे, मैं ऐसी उम्मीद भी रखता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, इस पांच साल के कार्यकाल में आपने सभी लोगों को अच्छी तरह से काम करने का मौका दिया है । जितने भी नए मेंबर्स थे, महिला मेंबर्स थीं, उन सभी लोगों को शून्य काल में 12-12 बजे तक काम करने के लिए एवं उनके संसदीय क्षेत्रों के सवालों को उठाने में मदद की है, इसलिए मैं खासकर से अध्यक्ष महोदय को धन्यवाद देता हूं ।

पिछले पांच सालों में राज्य सरकार को केन्द्र सरकार की तरफ से बहुत सारी मदद मिली है, इसलिए मैं एक और बार केन्द्र सरकार के सभी मंत्रियों और माननीय प्रधानमंत्री साहब को धन्यवाद देना चाहता हूं ।

श्री गिरीश चन्द्र (नगीना) : माननीय अध्यक्ष जी, आपने इस लोकतंत्र के मंदिर में एवं 17 वीं लोक सभा के अंतिम दिन में मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं ।

माननीय अध्यक्ष जी, मुझे बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष आदरणीय बहन जी के आशीर्वाद से यहां आने का मौका मिला है । मेरी नगीना लोक सभा (उत्तर प्रदेश) के मतदाताओं के आशीर्वाद से मुझे इस लोकतंत्र के मंदिर में आने का मौका मिला है । मैं सबसे पहले इस देश के ओजस्वी प्रधानमंत्री जी का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं, जिन्होंने इस देश के लिए अच्छे कदम उठाकर इस देश को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है ।

सभी आदरणीय मंत्रिगण और सभी दलों के जो फ्लोर लीडर्स हैं, मैं उन सबका भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं । हमारे जो सभी माननीय सांसदगण हैं, मैं उनका भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं ।

माननीय अध्यक्ष जी, आपके नेतृत्व में जिस तरीके से हम जैसे नए सदस्य को अगर शून्य काल में बोलने का समय नहीं मिला, तो हमने आपसे रिक्वेस्ट की और आपने हम लोगों को अपने क्षेत्र की जनता की समस्याओं और विकास के मुद्दों को उठाने के लिए रात के 11 या 12 बजे भी मौका दिया है । आपका जो नेतृत्व था, पूरे सदन को चलाने में आपकी अहम भूमिका रही है । अगर पक्ष और विपक्ष में कहीं तल्खी है, तो आपके सौम्य व्यवहार ने उसको शांत कराकर सदन की प्रक्रिया को चलाने में अपना योगदान दिया है, उसके लिए मैं आपका आभार व्यक्त करना चाहता हूं ।

महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि आज जो साथी यहां से जा रहे हैं, मैं आज उनको बधाई देता हूं कि आप लोग अपने क्षेत्रों में जाइए और आप पुनः 18 वीं लोक सभा में जीतकर आएंगे । ऐसा मैं चाहता हूं । आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

श्री पिनाकी मिश्रा (पुरी) : माननीय अध्यक्ष जी, मेरे ख्याल से इस हाउस के सभी मेंबर्स एक ही सेंटीमेंट व्यक्त करना चाहेंगे कि आपने अपने नेतृत्व में 17 वीं लोक सभा में सभी मेंबर्स को अपना मत रखने के लिए बहुत सहयोग और मौका दिया है । मैं विशेष रूप से मेरे नेता श्री नवीन पटनायक जी को धन्यवाद अर्पण करना चाहता

हूं, क्योंकि उनकी वजह से आज बीजू जनता दल के सारे साथी यहां पर हैं । मेरे साथी अनुभव मोहंती जी ने पहले ही आपको धन्यवाद दिया है ।

यहां पर सरकार की तरफ से आदरणीय राजनाथ सिंह जी और आदरणीय अमित शाह जी बैठे हुए हैं । उन्होंने माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में यहां पर सभी सांसदों को जितनी सुविधाएं देने का उद्यम किया है, उसके लिए मैं विशेष रूप से सत्ताधारी पक्ष को धन्यवाद देना चाहता हूं । इस संसद में कोई भी सांसद कम से कम यह तो नहीं कह सकता है कि सरकार की तरफ से सुविधाओं की कमी हुई है । इसलिए मैं विशेष रूप से सरकार को धन्यवाद देता हूं ।

एक और बार सभी सांसदों को श्री नवीन पटनायक जी और बीजू जनता दल की तरफ से मेरा अभिनंदन है । हम आशा करते हैं कि निर्वाचन होंगे, निर्वाचन में लड़ाई अच्छी होगी । बहुत से लोग चुनकर आएंगे । कुछ लोग रह जाएंगे, वे फिर से चुनकर आएंगे । आपका बहुत-बहुत धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष **:** क्या और कोई माननीय सदस्य बोलने के लिए बचे हैं?

कुंवर दानिश अली **(**अमरोहा**) :** अध्यक्ष महोदय, धन्यवाद । आज इस 17 वीं लोक सभा के अंतिम दिन हम सब लोग यहां विदाई के लिए इकट्ठे हैं । 17 वीं लोक सभा में जहां सरकार ने अपने एजेंडे और बिल्स पास किए, वहीं आपके नेतृत्व में ज़ीरो आवर बहुत पॉपुलर हुआ । आपने सभी को जीरो आवर में अपने-अपने मुद्दे उठाने का मौका दिया । मैं अपने क्षेत्र की जनता, अमरोहा की जनता, जिनके आशीर्वाद से मैं यहां पर आया हूं, धन्यवाद देता हूं । यहां पर जितने हमारे कुलीग्स हैं, चाहे वे सत्ता पक्ष के हों, चाहे विपक्ष के हों, एक बात हमारे वरिष्ठ सांसद कह रहे थे कि इस पूरे पांच साल के टेन्योर में एक कमी रही है । इसमें दो साल कोविड के दौरान निकल गए और अब हम नए सदन में आए हैं तो सेंट्रल हॉल की वाकई आवश्यकता महसूस होती है । कई बार यह होता है कि राज्य सभा वाले तो छोड़िए, इधर से उधर वालों से भी कई-कई दिन हो जाते हैं, लेकिन मुलाकात नहीं होती है ।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका धन्यवाद करते हुए ऊपर वाले से यही दुआ करता हूं कि जिस मकसद के लिए यह देश आजाद हुआ, हमारे संविधान के निर्माताओं ने जो संविधान बनाया, यह लोकतंत्र मजबूत रहे, जिंदा रहे, आने वाले वक्त में लोकतंत्र जिंदा रहे । इसी आशा के साथ मैं सबको एक बार फिर से धन्यवाद देता हूं ।

श्री हाजी फजलुर रहमान **(**सहारनपुर**) :** अध्यक्ष महोदय, शुक्रिया । आपने मुझे 17 वीं लोक सभा के आखिरी सदन में अंतिम दिन बोलने का मौका दिया । मैं इसलिए भी शुक्रिया अदा करता हूं कि मेरे जैसे न्यू कमर जब चुनकर आए तो आपके व्यवहार के कारण यह भी महसूस नहीं हो पाया कि हम फर्स्ट टाइम चुनकर आए हैं । इसके लिए हम आपका बहुत ज्यादा आभार व्यक्त करते हैं और उम्मीद करते हैं कि आपने जिस तरीके से न्यू कमर्स को बार-बार बोलने का मौका दिया, यहां तक सदन को रात के 12 बजे तक चलाया और सब लोगों को मौका मिला । खास तौर से कोविड के दौरान जिस तरीके से आपने सदन को चलाया, वह भी काबिल-ए-तारीफ है । आपके व्यवहार को देखकर तो ऐसा लगता है कि पार्लियामेंट की हिस्ट्री में एज ए स्पीकर सब लोग आपको याद रखेंगे । मैं इसी से मुताल्लिक एक शेर कहना चाहता हूं और आपकी नजर करना चाहता हूं ।

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बे-नूरी पे रोती है,

बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा ।

श्री भर्तृहरि महताब **(**कटक**) :** सर, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद । आज इस 17 वीं लोक सभा का अंतिम दिन है, अंतिम क्षण है । जैसे परीक्षा में जाने से पहले बच्चों के बीच स्कूल में हो या कॉलेज में हो, एक एंग्जायटी रहती है कि परीक्षा में क्या होगा और अगली श्रेणी में हम सब इकठ्ठा होंगे या नहीं । अभी यही माहौल यहां बना हुआ है ।

मैं आपको विशेष स्तर पर धन्यवाद देना चाहता हूं, क्योंकि आज हमारी पार्टी की एक बुजुर्ग महिला प्रमिला बिसाई, जो अस्का लोक सभा क्षेत्र से चुनाव लड़कर जीती थीं । वह सेल्फ हेल्फ ग्रुप चलाती हैं । हमारे मुख्य मंत्री नवीन जी ने उनको सेलेक्ट किया था । वह लोक सभा चुनाव लड़कर यहां आईं । उनकी यह दिक्कत थी कि वह यहां पर किस भाषा में बोलें । आपने खुद अपने चैम्बर में उनको बुलाया और कहा कि ओडिया भाषा में जो भी आपको बोलना है, आप बोलिए, मैं आपको पर्याप्त समय दूंगा । यह जो साहस आपने दिखाया और उनको आपने जो साहस दिया, यह सबसे बड़ी बात है । मैं वहां खड़ा था । जब वे निकलकर यहां आईं और बोलीं कि स्पीकर साहब ने तो बोलने के लिए बोल दिया है, लेकिन मैं क्या बोलूं? मैंने कहा कि आपकी सेल्फ हेल्प ग्रुप के बारे में जो भी बात है, वही कहिए । उन्होंने वही कहा । वह बार-बार यही कहती रहीं कि मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि इतने बड़े सदन में मैं खड़े होकर बोल पाऊंगी । मैं अपनी महिलाओं को प्रेरित करने के लिए थोड़ा भाषण दे देती हूं । इस तरह की प्रेरणा आपने दी है । 17 वीं लोक सभा में, मुझे जितनी जानकारी है, शायद सबसे ज्यादा नये मैम्बर चुनकर आए हैं । करीब 300 नये मैम्बर इस 17 वीं लोक सभा में आए हैं । किसी को भी यह अहसास नहीं हुआ कि हम नये चुनकर आए हैं और हम कैसे अपने लोगों की बात रखेंगे और क्या कहेंगे । इसलिए मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि कई ऐतिहासिक चीजें इस 17 वीं लोक सभा में हुई हैं । जैसे कहा जाता है कि हर एक दिन इतिहास के पन्ने में जुड़ जाता है । उस हिसाब से `History is in the making.? 17 वीं लोक सभा में आपकी अध्यक्षता में कई इतिहास के पन्ने जुड़े हैं जो हमारे देश को और भव्य बनाएगा ।

श्री मलूक नागर **(**बिजनौर**):** अध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया । मैं एक ही बात कहूंगा कि आपकी लीडरशिप में इतना काम हुआ कि कांस्टिट्युएंट असेंबली के बाद वर्ष 1952 में जो पहली लोक सभा थी, उसमें 677 सीटिंग्स हुईं थीं और 17 वीं लोक सभा में 300 के करीब हुई हैं**,** लेकिन काम आपने उससे भी ज्यादा किया है । सभी ने मिल**-**जुलकर काम किया है । आपने मुझे बोलने का मौका दिया**,** बहुत-बहुत धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष **:** श्रीमती नवनित रवि राणा । आप भी निर्दलीय सदस्यों की तरफ से बोल लीजिए ।

श्रीमती नवनित रवि राणा **(**अमरावती**):** महोदय, दिल में बटरफ्लाईज़ के जैसा फील हो रहा है कि आज आखिरी दिन है और सभी के दिलों में एक अलग सी धुक-धुक है । मैं सभागृह के बारे में और आपके बारे में जरूर कहना चाहूंगी कि इस पार्लियामेंट में आने के बाद जब पहले दिन हम बोलने की तैयारी कर भी नहीं रहे थे, तब कई सीनियर लीडर्स के आजू-बाजू बैठकर सुनने की कोशिश कर रहे थे तो उन्होंने कहा कि आप निर्दलीय हैं और पहली बार है तो आप लिखकर अपना नाम दीजिए । तब हमने शुरू किया । लेकिन इस पार्लियामेंट ने और आपने हम लोगों को यह महसूस नहीं होने दिया कि हम पहली बार पार्लियामेंट में आए हैं । अपने क्षेत्र के बारे में बहुत अलग तरीके से और मेरे क्षेत्र की सभी चीजें, जिनकी मेरे क्षेत्र को जरूरत थी, वह सब बहुत अच्छे तरीके से हमने रखीं । जितने भी सीनियर लीडर्स यहां पर हैं, हमारे जैसे जितने भी पहली बार आए पार्लियामेंटेरियंस हैं, हमने बहुत कुछ सीखा और पांच वर्षों में अलग-अलग तरीकों से अपने-अपने राज्य में हमने संघर्ष भी किया ।

अपने राज्य और क्षेत्र को आगे ले जाने के बारे में बहुत कुछ सीखा । स्पीकर साहब, आपका, हमारे अमित शाह जी का, हमारे देश के प्रधान मंत्री जी का और सभी ग्रेट लीडर्स, जितने भी यहां बैठे हैं, हमारा सौभाग्य है कि उनके साथ यह पार्लियामेंट हम लोगों ने शेयर किया । आप लोगों का आशीर्वाद है और मेरे क्षेत्र अमरावती के लोगों का आशीर्वाद है कि इस पार्लियामेंट में आकर उनकी सेवा में हमने पूरे पांच साल दिए । आप लोगों का आशीर्वाद रहे तो हम आने वाले समय में और ताकत से मैदान में काम करके हम उनको और सेवा दे सकेंगे । धन्यवाद ।

SHRI ADHIR RANJAN CHOWDHURY (BAHARAMPUR): Hon. Speaker Sir, Respected Prime Minister, Council of Ministers, UPA Chairperson and my leader Madam Sonia Gandhi, my friends and colleagues: सर, बहुत कुछ बोलने का दिल चाहता है, लेकिन बोलना क्या है, यह भी सोचता हूं । क्योंकि 17 वीं लोक सभा के आखिरी चरण पर हम पहुंच चुके हैं । पता नहीं पांच साल कैसे गुजर गए, समय और ज्वार किसी का इंतजार नहीं करते हैं । हमने बहुत सारा तजुर्बा हासिल भी किया है और दिल कहना चाहता है कि:

?जिंदगी में कितने दोस्त आए और कितने बिखर गए, कोई दो रोज के लिए

आया तो किसी ने दो कदम चलते ही साँस भर लिया, पर जिंदगी का दूसरा

नाम है, दरिया इसलिए बस बहते रहेंगे, चाहे रास्तों पर फूल गिरें या पत्थर ।?

The coming to the close of the current Winter Session, which is the last of the Seventeenth Lok Sabha, marks yet an eventful milestone in our Parliamentary history. As witnessed on several occasions in the past, the current Lok Sabha too has had its share of tumultuous and also epoch-making events. We have witnessed the inauguration, opening and shifting of the venue of our Parliamentary business to the new Parliament House from the iconic Parliament House Building which has now been re-named as Samvidhan Sadan. We have got accustomed, or some old timers like me are still in the process of getting accustomed, to the environs of the new Parliament House. We have commenced the journey of our Parliament from this new Parliament House from 19th September, 2023 onwards.

I would like to recall at this juncture that it was on 19th June, 2019, that is two days following the commencement of the first Session of the current Lok Sabha that Shri Om Birla was elected as the Speaker, Lok Sabha. Right from the day of assuming Office, Shri Birla has been steadfastly taking, and is continuing to take a number of initiatives for smoothening and improving the Parliamentary practices and processes, and providing better amenities and facilities to the hon. Members be it accommodation, medical facilities, transport, or appropriate support mechanism for discharging one?s Parliamentary duties.

प्राइम मिनिस्टर साहब, आप उस समय नहीं थे, लेकिन मैंने आपका जिक्र किया था । मैं आपको रिस्पेक्टेड प्राइम मिनिस्टर बोल चुका हूँ । Being the Chairperson of the Public Accounts Committee, I am particularly grateful to the Speaker for his leadership and guidance in holding the centennial celebrations of the PAC on a grand scale in December, 2021. With a two-day Conference of the Chairpersons of PACs of the State and Union Territory Legislatures, where the attendees included Presiding Officers of various Legislative Bodies ? holding exhibitions in physical and digital formats and release of the Centenary Souvenir on the ?100 Year Journey of the PAC? by the President of India in the Central Hall of Samvidhan Sadan ? the event was truly epoch making in the history of the Indian Parliament and its Committees.

While we have discussed, debated and voted upon a number of matters of public importance, we have also had a fair share of adjournments and loss of business time of the House. Those holding alternate or different views tried to get their points across, which ultimately led to disruptions. This is a part and parcel of our democratic process. Debate and discussion are the hallmarks of our Parliamentary system, and adopting even the remotest method of browbeating or stifling those holding alternate views on policy matters and issues is best avoided.

Despite the pulls and pressures of the times, the hon. Speaker has always maintained his composure, accommodated or tried to accommodate all sections of the House in expressing their viewpoints, and conducted the proceedings of the House with diligence and dignity.

Hon. Speaker, Sir, in the last 14 Sessions of the current Lok Sabha, which will soon come to a close, we have had a good share of events of immense concern to the people and the nation as a whole as well as those of significance. The Opposition in the House played its role responsibly in raising and debating on issues of immense public interest and concern. To recall, such matters that we raised and debated on included the fall out of COVID pandemic on the common people in particular and the Government?s response to the situation, threat posed to our nation?s security with the aggression and hostility of our neighbouring countries, problems posed by pollution, rising levels of unemployment and jobless growth, and the effect of increasing inflationary pressures on the lives of common people.

In the previous Session, that is the Fourteenth Session, we witnessed an unfortunate incident of security breach in the Parliament House which obviously is not a good sign and does not augur well. I can see and understand that remedial measures are being taken. With the augmenting of the security apparatus, I am

sure that we will not be witnessing such incidents or face any form of security threat in future.

In statistical terms, the 17th Lok Sabha has been very productive with a very significant number of legislations passed, questions posed, matters of public importance raised during the Zero Hour and under Rule 377, and discussions held on matters of public importance. The legislations enacted by us in the current Lok Sabha include the Constitution (One Hundred and Twenty-Eighth Amendment) Bill, 2023 providing for reservation of seats to women in the Lok Sabha and other Legislative Assemblies. Yet, the work pertaining to empowerment needs to be carried forward as social classes cutting across gender, and the weak and deprived, too deserve a chance for betterment. Also, the process of appropriately and elaborately debating and discussing legislations that have a bearing on the lives of the common people at large cannot and should not be undermined in any way.

Hon. Speaker, Sir, as a responsible Opposition, my Party has in the course of the last few years played its due role meaningfully. सर, मैं दूर-दराज गांव का एक नुमाइंदा हूं । मेरी नेत्री मैडम सोनिया गांधी जी ने मुझे हिन्दुस्तान के नेशनल पार्टी, कांग्रेस का सदन में अगुवाई करने का मौका दिया है, इसके लिए मैं इनके प्रति आभारी हूं और आप सब के प्रति भी आभारी हूं । We have always endeavoured to strengthen our parliamentary system of governance and will continue to do so.

The glory associated with India?s freedom struggle is well recorded and is a remarkable chapter in world history. My Party has always stood and fought for preserving, protecting and upholding our hard-earned freedom and democratic rights, and we always continue to do so.

I would at this point like to place on record my appreciation for the immense amount of hard work and labour that the Secretariat staff, who work under the administrative control of the Secretary General, including the Legislative Staff, Reporters, Interpreters and the Security Personnel have put in the last few years of the current Lok Sabha and ensured that the sessions of the House were held with precision and perfection.

As the Leader of the largest Opposition Party in the House, I would take this opportunity to express my thanks and gratitude to the hon. Speaker for his help and support. As I mentioned earlier, the 17th Lok Sabha has been noteworthy and eventful in many ways and will be remembered for its many firsts.

Hon. Speaker, Sir, I wish to conclude by wishing my colleagues in the House the very best for the coming times. Thank you, Sir.

माननीय अध्यक्ष **:** माननीय प्रधान मंत्री जी ।

प्रधान मंत्री **(**श्री नरेन्द्र मोदी**):** आदरणीय अध्यक्ष जी, आज का यह दिवस लोकतंत्र की एक महान परंपरा का महत्वपूर्ण दिवस है । 17 वीं लोक सभा ने 5 वर्ष देश सेवा में जिस प्रकार से अनेक विध महत्वपूर्ण निर्णय किए, अनेक चुनौतियों को सब ने अपने सामर्थ्य से देश को उचित दिशा देने का प्रयास किया । एक प्रकार से आज का दिवस हम सब की उन 5 वर्ष की वैचारिक यात्रा का, राष्ट्र को समर्पित उस समय का, देश को फिर से एक बार अपने संकल्पों को राष्ट्र के चरणों में समर्पित करने का यह अवसर है । ये 5 वर्ष देश में रिफॉर्म, परफॉर्म एंड ट्रांसफॉर्म के हैं । यह बहुत रेयर होता है कि रिफॉर्म भी हो, परफॉर्म भी हो और हम ट्रांसफॉर्म होता अपनी आंखों के सामने देख पाते हों, एक नया विश्वास भरता हो । यह अपने आप में 17 वीं लोक सभा से आज देश अनुभव कर रहा है । मुझे पक्का विश्वास है कि देश 17 वीं लोक सभा को जरूर आशीर्वाद देता रहेगा । इन सारी प्रक्रियाओं में सदन के सभी माननीय सदस्यों का बहुत महत्वपूर्ण रोल रहा है, महत्वपूर्ण भूमिका रही है । यह समय है कि मैं सभी माननीय सांसदों का इस गृह के नेता के नाते भी और आप सब के एक साथी के नाते भी आप सब का अभिनंदन करता हूं ।

विशेष रूप से, आदरणीय अध्यक्ष जी मैं आपके प्रति भी हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं । पांचों वर्ष, कभी-कभी सुमित्रा जी मुक्त हास्य करती थीं, लेकिन आप हर पल, आपका चेहरा मुस्कान से भरा रहता था । यहां कुछ भी हो जाए, लेकिन कभी भी उस मुस्कान में कोई कमी नहीं आई । अनेक विध परिस्थितियों में आपने बहुत ही संतुलित भाव से और सच्चे अर्थ में निष्पक्ष भाव से इस सदन का मार्गदर्शन किया, सदन का नेतृत्व किया, मैं इसके लिए भी आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूं । आक्रोश के पल भी आए, आरोप के भी पल आए, लेकिन आपने पूरे धैर्य के साथ इन सभी स्थितियों को संभालते हुए और एक सूझ-बूझ के साथ आपने सदन को चलाया, हम सब का मार्गदर्शन किया, इसके लिए भी मैं आपका आभारी हूं ।

17.00 hrs

आदरणीय अध्यक्ष जी, 5 वर्षो में इस सदी का सबसे बड़ा संकट पूरी मानव जाति ने झेला । कौन बचेगा, कौन बच पाएगा, कोई किसी को बचा सकता है या नहीं बचा सकता है, वह ऐसी अवस्था थी । ऐसे में, सदन में आना, अपना घर छोड़कर निकलना, यह भी संकट का कार्य था । इसके बाद भी, जो भी नयी व्यवस्थाएं आपको करनी पड़ी, आपने उनको किया । आपने देश के काम को रुकने नहीं दिया । सदन की गरिमा भी बनी रहे और देश के आवश्यक कामों को जो गति देनी चाहिए, वह गति भी बनी रहे और उस काम में सदन की जो भूमिका है, वह रत्ती भर भी पीछे न रहे, आपने इसे बड़ी कुशलता के साथ सम्भाला और दुनिया के लिए एक उदाहरण के रूप में रखा ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं माननीय सांसदों का भी, इस बात के लिए आभार व्यक्त करना चाहता हूँ कि उस कालखंड में देश की आवश्यकताओं को देखते हुए, सांसद निधि छोड़ने का प्रस्ताव माननीय सांसदों के सामने रखा । एक पल का विलम्ब किये बिना, सभी माननीय सांसदों ने सांसद निधि छोड़ दी ।

इतना ही नहीं, देशवासियों को एक पाज़िटिव मैसेज देने के लिए अपने आचरण से समाज को एक विश्वास देने के लिए सांसदों ने अपनी सैलरी में से 30 प्रतिशत की कटौती का निर्णय सबने स्वयं किया । इससे देश को भी विश्वास हुआ कि ये सबसे पहले छोड़ने वाले लोग हैं ।

हम सभी सांसद बिना कारण साल में दो बार हिन्दुस्तान की मीडिया के किसी न किसी कोने में गाली खाते रहते थे कि इन सांसदों को इतना मिलता है और ये लोग कैंटीन में इतने में खाते हैं । बाहर इतने में मिलता है और कैंटीन में इतने में मिलता है । यानी बाल नोंच लिये जाते थे । आपने निर्णय किया, सबके लिए कैंटीन में समान रेट होंगे । इसके लिए सांसदों ने कभी विरोध नहीं किया, शिकायत भी नहीं की । बिना कारण सांसदों की फजीहत करने वाले लोग मजे लेते थे, उससे भी आपने हम सबको बचा लिया । इसके लिए भी मैं आपका आभार व्यक्त करता हूँ ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह बात सही है कि कई लोक सभा के सदस्य, चाहे वे 15 वीं लोक सभा, 16 वीं लोक सभा या 17 वीं लोक सभा के सदस्य हों, संसद का नया भवन होना चाहिए, इसकी चर्चा सबने की, सामूहिक रूप से की, एक स्वर से की । लेकिन इसका निर्णय नहीं हो पाता था । यह आपका नेतृत्व है, जिसने निर्णय किया, चीजों को आगे बढ़ाया, सरकार के साथ अनेक मीटिंग्स की गईं और उसी का परिणाम है कि आज देश को यह नया संसद भवन प्राप्त हुआ है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, संसद के नये भवन में, एक विरासत का अंश और आज़ादी का जो पहला पल था, उसको जीवंत रखने का हमेशा हमारे मार्गदर्शक के रूप में सैंगोल को यहाँ स्थापित करने का काम हुआ । अब प्रतिवर्ष इसे सेरिमोनियल इवेंट का हिस्सा बनाने का एक बहुत बड़ा काम आपके नेतृत्व में हुआ है । जो भारत की आने वाली पीढ़ियों को हमेशा-हमेशा आजादी के उस प्रथम पल के साथ जोड़कर रखेगा । आजादी का वह पल क्यों था, हमें वह याद रहेगा तो देश को आगे ले जाने की वह प्रेरणा भी बनी रहेगी । उस पवित्र काम को आपने किया है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस कालखंड में जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिली । भारत को बहुत सम्मान मिला । देश के हर राज्य ने अपने-अपने तरीके से विश्व के सामने भारत का सामर्थ्य और अपने राज्य की पहचान बखूबी प्रस्तुत की, जिसका प्रभाव आज भी विश्व के मन पर है । उसके साथ आपके नेतृत्व में जी-20 की तरह पी-20 का सम्मेलन हुआ और विश्व के अनेक देशों के स्पीकर्स यहाँ आए और मदर ऑफ डेमोक्रेसी, भारत की इस महान परम्परा को लेकर, किस डेमोक्रेटिक वैल्यूज को लेकर सदियों से हम आगे बढ़े हैं, व्यवस्थाएं बदली होंगी, लेकिन भारत का डेमोक्रेटिक मन हमेशा बना रहा है । इस बात को आपने विश्व के स्पीकर्स के सामने बखूबी प्रस्तुत किया और भारत को लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में भी एक प्रतिष्ठा प्राप्त कराने का काम आपके नेतृत्व में हुआ ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं एक बात के लिए आपका विशेष अभिनन्दन करना चाहता हूँ । शायद हमारे सभी माननीय सांसदों का और मीडिया का भी उस तरफ ध्यान नहीं गया है । हम जिसे संविधान सदन कहते हैं, जो पुरानी संसद है, जिसमें महापुरुषों की जन्म जयंती के दिन उनकी प्रतिमा को पुष्प चढ़ाने के लिए हम लोग एकत्र होते हैं । वह एक 10 मिनट का इवेंट होता था और चले जाते थे । आपने देश भर में इन महापुरुषों के लिए वक्तव्य स्पर्धा, निबंध स्पर्धा का एक अभियान चलाया है । उसमें से जो बेस्ट ऑरेटर होते थे और बेस्ट एस्सेज होते थे, हर राज्य से दो-दो बालक उस दिन दिल्ली आते थे और उस महापुरुष की जन्म जयंती के समय, पुष्प वर्षा के समय वे वहाँ मौजूद रहते थे, देश के नेताओं के साथ और बाद में वे पूरा दिन वहाँ रहकर उस महापुरुष पर अपना व्याख्यान देते थे । वे दिल्ली के अन्य स्थानों पर भी जाते थे । वे संसद की गतिविधियों को समझते थे । यानी आपने यह निरन्तर प्रक्रिया चलाकर के देश के लाखों विद्यार्थियों को भारत की संसदीय परम्परा से जोड़ने

का एक बहुत बड़ा काम किया है । यह परम्परा आपके खाते में रहेगी और आने वाले समय में हर कोई बड़े गौरव के साथ इस परम्परा को आगे बढ़ायेगा । मैं इसके लिए भी आपका अभिनन्दन करता हूँ ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, संसद की लाइब्रेरी, जिसको उपयोग करना चाहिए, वे कितना कर पाते थे, वह तो मैं नहीं कह सकता हूँ, लेकिन आपने उसके दरवाजे सामान्य व्यक्ति के लिए खोल दिए थे । ज्ञान का यह खजाना, परम्पराओं की विरासत, उसको आपने जन सामान्य के लिए खोलकर बहुत बड़ी सेवा की है । मैं इसके लिए भी आपका हृदय से अभिनन्दन करता हूँ । पेपरलेस पार्लियामेंट, डिजिटलाइजेशन, आधुनिक टेक्नोलॉजी हमारी व्यवस्था में कैसे बने, शुरू में कुछ साथियों को दिक्कत रही, लेकिन अब सब इसके आदी हो गए हैं । मैं देखता हूँ कि जब यहाँ बैठते हैं तो कुछ न कुछ करते रहते हैं । यह अपने आपमें एक बहुत बड़ा काम आपने किया है । आपने स्थायी व्यवस्थाएं निर्माण की हैं, इसके लिए मैं आपका बहुत आभार व्यक्त करता हूं ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आपकी कुशलता और माननीय सांसदों की जागरुकता, मैं सबका संयुक्त प्रयास कह सकता हूं जिसके कारण 17 वीं लोक सभा की प्रोडक्टिविटी करीब-करीब 97 परसेंट रही है । 97 परसेंट प्रोडक्टिविटी अपने आप में प्रसन्नता का विषय है, लेकिन मुझे विश्वास है कि आज जब हम 17 वीं लोक सभा की समाप्ति की तरफ बढ़ रहे हैं तब एक संकल्प लेकर 18 वीं लोक सभा प्रारम्भ होगी कि हमेशा शत् प्रतिशत से ज्यादा प्रोडक्टिव वाली हमारी कार्यवाही हो और उसमें भी सात सत्र 100 प्रतिशत से भी ज्यादा प्रोडक्टिविटी वाले हैं । मैंने देखा कि आपने रात-रात भर बैठ कर भी हर सांसद के मन की बात को सरकार के सामने लाने का भरपूर प्रयास किया । मैं इस सफलता के लिए सभी माननीय सांसदों का और सभी फ्लोर लीडर्स का भी हृदय से आभार और अभिनंदन व्यक्त करता हूं । 17 वीं लोक सभा के पहले सत्र में दोनों सदनों ने 30 विधेयक पारित किए थे और यह अपने आप में रिकार्ड है । नए-नए बैंच मार्क 17 वीं लोक सभा ने बनाए हैं । आजादी के 75 वर्ष पूरा होने का उत्सव, हम सबको कितना बड़ा सौभाग्य मिला है कि ऐसे अवसर पर हमारे सदन ने अत्यंत महत्वपूर्ण कामों का नेतृत्व किया, हर स्थान पर हुआ और शायद ही कोई ऐसा सांसद होगा, जिसने आजादी के 75 वर्ष को लोकोत्सव बनाने में अपने-अपने क्षेत्र में भूमिका अदा न की हो । यानी सचमुच में आजादी के 75 वर्ष को देश ने जी भर कर उत्सव से मनाया और उसमें हमारे माननीय सांसदों की और इस सदन की बहुत बड़ी भूमिका रही है । हमारे संविधान लागू होने के 75 वर्ष, यह भी अवसर इसी समय, इसी सदन को मिला है, हम सभी सांसदों को मिला है और संविधान की जो भी जिम्मेदारियां हैं, उनकी शुरूआत यहीं से होती है और उनके साथ जुड़ना अपने-आप में बहुत प्रेरक है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इस कार्यकाल में बहुत ही रिफार्म्स हुए और गेमचेंजर, 21 वीं सदी के भारत की मजबूत नींव उन सारी बातों में नजर आती है । एक बड़े बदलाव की तरफ तेज गति से देश आगे बढ़ा है और इसमें भी सदन के सभी साथियों ने बहुत उत्तम मार्गदर्शन किया है और हिस्सेदारी जताई है । हम संतोष से कह सकते हैं कि हमारी अनेक पीढ़ियां जिन बातों का इंतजार करती थीं, ऐसे बहुत से काम इस 17 वीं लोक सभा के माध्यम से पूरे हुए । पीढ़ियों का इंतजार खत्म हुआ । अनेक पीढ़ियों ने एक संविधान, जिसके लिए सपना देखा था, लेकिन हर पल उस संविधान में एक दरार दिखाई देती थी, एक खाई नजर आती थी । एक रुकावट चुभती थी, लेकिन इसी सदन ने आर्टिकल 370 हटाकर संविधान के पूर्ण रूप को, उसके पूर्ण प्रकाश के साथ उसका प्रगटीकरण हुआ । मैं मानता हूं जब संविधान के 75 वर्ष हुए, जिन-जिन महापुरुषों ने संविधान को बनाया है, उनकी आत्मा जहां भी होगी, जरूर हमें आशीर्वाद देते होंगे, जो काम हमने पूरा किया है ।

जम्मू-कश्मीर के लोगों को सामाजिक न्याय से वंचित रखा गया था । आज हमें संतोष है कि सामाजिक न्याय का जो हमारा कमिटमेंट है, वह जम्मू-कश्मीर के हमारे भाई-बहनों को भी पहुंचाकर आज हम एक संतोष की अनुभूति कर रहे हैं ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आतंकवाद नासूर बन गया था, देश के सीने पर गोलियां चलाता रहता था । माँ भारती की धरा आए दिन रक्तरंजित हो जाती थी । देश के अनेक विद्, होनहार लोग आतंकवाद की बलि चढ़ जाते थे । हमने आतंकवाद के विरुद्ध सख्त कानून बनाए, इसी सदन ने बनाए । मुझे पक्का विश्वास है कि उसके कारण जो लोग ऐसी समस्याओं से जूझते हैं, उनको एक बल मिला है, मानसिक रूप से उनका कॉन्फिडेंस बढ़ा है और भारत को पूर्ण रूप से आतंकवाद से मुक्ति का एक अहसास हो रहा है और वह सपना भी सिद्ध होकर रहेगा ।

हम 75 सालों तक अंग्रेजों की दी हुई दंड संहिता में जीते रहे थे । हम देश को गर्व से कहेंगे, नयी पीढ़ी को कहेंगे, आप अपने पोते-पोती को गर्व से कह सकेंगे कि देश ने भले ही 75 साल दंड संहिता में जिया है, लेकिन अब आने वाली पीढ़ी न्याय संहिता में जियेगी और यही सच्चा लोकतंत्र है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, मैं आपका एक और बात के लिए अभिनन्दन करना चाहूंगा कि नये सदन की भव्यता वगैरह तो है ही, लेकिन उसका प्रारम्भ एक ऐसे काम से हुआ है, जो भारत की मूलभूत मान्यताओं को बल देता है और वह नारी शक्ति वंदन अधिनियम है । जब भी इस नए सदन की चर्चा होगी तो नारी शक्ति वंदन अधिनियम का जिक्र होकर रहेगा । भले ही वह एक छोटा सत्र था, लेकिन दूरगामी निर्णय करने वाला सत्र था । इस नए सदन की पवित्रता का अहसास उसी पल शुरू हो गया था, जो हम लोगों को एक नयी शक्ति देने वाला है और उसी का परिणाम है कि आने वाले समय में जब बहुत बड़ी मात्रा में हमारी माताएं-बहनें बैठी होंगी, देश गौरव की अनुभूति करेगा ।

तीन तलाक - कितने उतार-चढ़ाव से हमारी मुस्लिम बहनें इंतजार कर रही थीं । अदालतों ने उनके पक्ष में निर्णय दिए थे, लेकिन वह हक उनको प्राप्त नहीं हो रहा था, मजबूरियों से गुजारा करना पड़ रहा था । कोई प्रकट रूप से कहे, कोई अप्रकट रूप से कहे, लेकिन तीन तलाक से मुक्ति का बहुत महत्वपूर्ण और नारी शक्ति के सम्मान का काम सत्रहवीं लोक सभा ने किया है । सभी माननीय सांसद, उनके विचार कुछ भी रहे हों, उनका निर्णय कुछ भी रहा हो, लेकिन कभी न कभी तो वे कहेंगे कि हाँ, इन बेटियों को न्याय देने का काम करते समय हम वहां मौजूद थे । पीढ़ियों से होता यह अन्याय हमने समाप्त किया और वे बहनें आज आशीर्वाद दे रही हैं ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, आने वाले 25 वर्ष हमारे देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं । राजनीति की गहमागहमी अपनी जगह पर है, राजनीतिक क्षेत्र के लोगों की आशाएं-आकांक्षाएं अपनी जगह पर हैं, लेकिन देश की अपेक्षा, देश की आकांक्षा, देश का सपना, देश का संकल्प यह बन चुका है । ये 25 साल वो हैं, जिसमें देश इच्छित परिणाम प्राप्त करके रहेगा ।

सन् 1930 में जब महात्मा गांधी ने नमक के सत्याग्रह के लिए दांडी की यात्रा की थी, तब भी घोषणा होने के पहले लोगों को सामर्थ्य नज़र नहीं आया था । चाहे स्वदेशी आंदोलन हो, चाहे सत्याग्रह की परंपरा हो, चाहे नमक का सत्याग्रह हो, उस समय तो वे घटनाएं छोटी लगती थीं, लेकिन सन् 1947 तक, 25 साल के उस कालखण्ड ने देश के अंदर जज्बा पैदा कर दिया, हर व्यक्ति के दिल में वह जज्बा पैदा कर दिया था कि अब तो आज़ाद हो कर रहना है । मैं आज देख रहा हूँ कि देश में वह जज्बा पैदा हुआ है कि हर गली-मोहल्ले में, हर बच्चे के मुंह से निकला है कि 25 सालों में हम विकसित भारत बना देंगे । इसलिए ये 25 साल मेरे देश की युवाशक्ति के अत्यंत महत्वपूर्ण कालखंड हैं । हम में से कोई ऐसा नहीं होगा, जो नहीं चाहता होगा कि 25 साल में देश विकसित

भारत न बने । हर किसी का सपना है, कुछ लोगों ने सपने को संकल्प बना लिया है । कुछ लोगों को शायद संकल्प बनाते देर हो जाएगी, लेकिन जुड़ना हरेक को होगा । जो जुड़ भी नहीं पाएंगे और जीवित होंगे, तो फल तो जरूर खाएंगे, यह मेरा विश्वास है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, इन पांच वर्षों में युवाओं के लिए बहुत ही ऐतिहासिक कानून भी बने हैं । व्यवस्था में पारदर्शिता ला कर युवाओं को नए मौके दिए गए हैं । पेपर लीक जैसी समस्या हमारे युवाओं को चिंतित करती थी । हमने बहुत ही कठोर कानून बनाया है, ताकि उनके मन में जो सवालिया निशान है और व्यवस्था के प्रति उनका जो गुस्सा था, उसको एड्रेस करने का सभी माननीय सांसदों ने देश के युवाओं के मन के भाव को समझ कर बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय किया है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, यह बात सही है कि कोई भी मानव जाति अनुसंधान के बिना आगे नहीं बढ़ सकती है । उसको नित्य परिवर्तन के लिए अनुसंधान अनिवार्य होते हैं और मानव जाति का लाखों सालों का इतिहास गवाह है कि हर काल में अनुसंधान होते गए हैं, जीवन बढ़ता चला गया है, जीवन का विस्तार होता गया है । इस सदन ने विधिवत रूप से कानूनी व्यवस्था खड़ी कर के अनुसंधान को प्रोत्साहन देने का बहुत बड़ा काम किया है । नेशनल रिसर्च फाउंडेशन, यह कानून आम तौर पर रोज़मर्रा की राजनीति की चर्चा का विषय बन नहीं पाता है, लेकिन इसके परिणाम बहुत दूरगामी होने वाले हैं । इतना बड़ा महत्वपूर्ण काम इस 17 वीं लोक सभा ने किया है । मुझे पक्का विश्वास है कि देश की युवा शक्ति इस व्यवस्था के कारण दुनिया का रिसर्च का एक हब हमारा देश बन सकता है । हमारे देश के युवा का टैलेंट ऐसा है कि आज भी दुनिया की बहुत सी कंपनियां ऐसी हैं, जिनके इनोवेशन के काम आज भी भारत में हो रहे हैं । इसलिए देश बहुत बड़ा हब बनेगा, यह मेरा विश्वास है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 21 वीं सदी में हमारी बेसिक नीडस पूरी तरह बदल रही है । कल तक जिसका कोई मूल्य नहीं था, कोई ध्यान नहीं था, वह आने वाले समय में बहुत अमूल्य बन चुका है । जैसे डेटा है । पूरी दुनिया में चर्चा है कि डेटा का सामर्थ्य क्या होता है । हमने डेटा प्रोटेक्शन बिल ला कर पूरी भावी पीढ़ी को सुरक्षित कर दिया है । एक नया शस्त्र हमने उनके हाथ में दिया है, जिसके आधार पर वह अपने भविष्य को बनाने के लिए इसका सही इस्तेमाल भी करेंगे । डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन एक्ट हमारी 21 वीं सदी की पीढ़ी को और दुनिया के लोगों को भी भारत के इस एक्ट के प्रति रुचि बनी हुई है । दुनिया के देश उसका अध्ययन कर रहे हैं और अपने-अपने यहां व्यवस्थानुकूल करने के लिए प्रयास कर रहे हैं ।

डाटा का उपयोग कैसे हो, उसकी गाइडलाइंस भी उसमें है । अनेक प्रकार से प्रोटेक्शन का पूरा प्रबंध करते हुए, इसका सामर्थ्य कैसे आए, जिस डेटा को लोग आज गोल्ड माइन कहते हैं, न्यू ऑयल कहते हैं, मैं समझता हूं कि वह सामर्थ्य भारत को प्राप्त हो गया है । भारत की शक्ति इसलिए विशेष है, क्योंकि विविधताओं से भरा हुआ यह देश है । हमारे पास जिस प्रकार की जानकारी है, हमारे साथ जुडे हुए जो डेटा जेनरेट होते हैं, सिर्फ हमारे रेलवे पैसेंजर्स के डेटा कोई देख ले, यह दुनिया के लिए बहुत बड़ा संसाधन का विषय बन सकता है । उसकी ताकत को हमने पहचान करके इस कानूनी व्यवस्था को दिया है

आदरणीय अध्यक्ष जी, जल, थल, नभ ? सदियों से इन क्षेत्रों की चर्चा चली है, लेकिन अब समुद्री शक्ति, स्पेस की शक्ति और साइबर की शक्ति, ऐसी तीनों शक्तियों का मुकाबला करने की आवश्यकता उठ खड़ी हुई है और विश्व जिस प्रकार के संकटों से गुजर रहा है, विश्व में जिस प्रकार की विचारें प्रभावित करने का प्रयास कर रही हैं तब इन क्षेत्रों में हमें सकारात्मक सामर्थ्य भी पैदा करना है और नकारात्मक शक्तियों से अपने-आप को और चुनौतियों को लेने का सामर्थ्य भी बनाना है । उसके लिए स्पेस से जुड़े आवश्यक रिफॉर्म्स बहुत अनिवार्य हैं । बहुत दूरगामी दृष्टि के साथ स्पेस रिफॉर्म का काम हमारे यहां हुआ है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, देश ने जो आर्थिक रिफॉर्म किए हैं, उनमें 17 वीं लोक सभा के सभी सांसदों की बहुत बड़ी भूमिका रही है । बीते वर्षों में हजारों कम्प्लाएन्सेस बेवजह और जनता-जर्नादन को ऐसी चीजों में उलझाए रखा, गवर्नेंस की एक ऐसी विकृत व्यवस्था विकसित हो गई, उससे मुक्ति दिलाने का बहुत बड़ा काम हमारे यहां हुआ है । इसके लिए भी इस सदन का मैं आभारी हूं । इस प्रकार के कम्प्लाएन्सेस के बोझ में सामान्य व्यक्ति तो दब जाता है । मैंने तो एक बार लालकिले से भी कहा था कि जब हम मिनिमम गवर्नमेंट और मैक्सिमम गवर्नेंस देते हैं, मैं दिल से मानता हूं कि लोगों की जिंदगी में से जितना जल्द सरकार निकल जाए, उतना ही लोकतंत्र का सामर्थ्य बढ़ेगा । रोजमर्रा की जिंदगी में हर डगर पर एक सरकार टांग क्यों अड़ाए! हाँ, जो अभाव में हैं, उसके लिए सरकार हर पल मौजूद हो, लेकिन सरकार का प्रभाव उसकी जिंदगी को ही रूकावट बना दे, ऐसा लोकतंत्र नहीं हो सकता है । इसलिए, हमारा मकसद है, सामान्य मानवों की जिंदगी से सरकार जितनी जल्दी हट जाए, कम से कम उसकी जिंदगी में सरकार का नाता रहे, वैसा समृद्ध लोकतंत्र दुनिया के सामने हमें आगे बढ़ाना चाहिए । उस सपने को पूरा करेंगे ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, कंपनीज़ एक्ट, लिमिटेड लायबिलिटी पार्टनरशिप एक्ट, 60 से अधिक गैर-जरूरी कानूनों को हमने हटाया है । ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए यह बहुत बड़ी आवश्यकता थी । अब देश को आगे बढ़ना है तो बहुत सारी रुकावटों से बाहर आना पड़ेगा । । हमारे कई कानून तो ऐसे थे, छोटी-छोटी कानूनों से जेल में भर दो, बस । यहाँ तक कि एक फैक्ट्री है और उसके शौचालय को छह में एक बार अगर वाइट वाश नहीं किया है तो उसके लिए जेल थी । वह कितनी बड़ी कंपनी का मालिक क्यों न हो, अब जो एक प्रकार से अपने आप को बड़े लिबरल कहते हैं, उन लोगों की आइडियोलॉजी और देश में एक तिमारशाही का जमाना, उन सारों से मुक्ति दिलाने का हमें भरोसा होना चाहिए । वह जरूर करेगा । आज लोगों के घरों में लिफ्ट होती है, सोसाइटी और फ्लैट वाले लोग अपने लिफ्ट का रिपेयर करते ही हैं । वे हर चीज कर लेते हैं । यह जो समाज और नागरिक पर भरोसा करने का काम है, बहुत तेजी से बढ़ाने का काम 17 वीं लोक सभा ने किया है ।

जन विश्वास एक्ट, मैं समझता हूं कि 180 से ज्यादा प्रावधानों को डीक्रिमिनलाइज करने का काम किया है । छोटी-छोटी बात में जेल में डाल देना, डीक्रिमिनलाइज करके हमने नागरिक को ताकत दी है । वह इसी सदन ने किया है, यही माननीय सांसदों ने किया है । कोर्ट के चक्कर से जिंदगी बचाने के लिए बहुत महत्वूपर्ण काम, कोर्ट के बाहर विवादों से मुक्ति, उस दिशा में एक महत्वपूर्ण काम, मध्यस्थता कानून, उस दिशा में भी इन्हीं माननीय सांसदों ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है ।

जो हमेशा हाशिए पर थे, किनारे पर थे, जिनको कोई पूछता नहीं था, सरकार होने का उनको एहसास हुआ है । हां, सरकार है, हम हैं । जब कोविड में मुफ्त इंजेक्शन मिलता था, उसको भरोसा होता था, चलिए, जान बच गई । सरकार होने का उसको एहसास होता है । यही तो सामान्य मानवी की जिंदगी में बहुत आवश्यक होता है । वह असहायता न अनुभव हो कि अब क्या होगा, यह स्थिति पैदा नहीं होनी चाहिए ।

ट्रांसजेंडर समुदाय अपमानित महसूस करता था । जब बार-बार वह अपमानित होता था, तो उसके अन्दर भी विकृतियों की सम्भावनाएं बढ़ती रहती थीं और ऐसे विषयों से सब लोग दूर भागते थे । 17 वीं लोक सभा के सभी माननीय सांसदों ने ट्रांसजेंडर्स के प्रति भी संवेदना जताई और उनकी बेहतरीन जिंदगी बनाई । आज दुनिया के अंदर, भारत ने ट्रांसजेंडर्स के लिए जो काम, निर्णय किए हैं, इनकी चर्चा है । इवेन हमारी माता-बहनों के लिए प्रेगनेंसी के लिए 26 वीक की डिलीवरी के समय की छुट्टी मिले तो दुनिया के समृद्ध देशों को भी आश्चर्य होता था । यानी ये प्रोग्रेसिव निर्णय यहीं पर हुए हैं, इसी 17 वीं लोक सभा में हुए हैं । हमने ट्रांसजेंडर को एक पहचान दी है । अब तक करीब 16-17 हजार ट्रांसजेंडर्स को उनका आइडेंटिटी कार्ड दिया गया है, ताकि उनके जीवन को

और सरल बना सकें । मैंने देखा है कि अब तो मुद्रा योजना से पैसे लेकर वह छोटा-मोटा बिजनेस करने लगी है, कमाने लगी है । हमने ?पद्म एवार्ड? ट्रांसजेंडर को दिया है । एक सम्मान की जिंदगी जीने के लिए दी है । सरकार से जुड़ी अनेक योजनाओं का लाभ जो अब तक उनको मिलता नहीं था, मिलना प्रारम्भ हुआ है, सम्माननीय जिंदगी मिली है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, बहुत विकट काल में हमारा समय गया, क्योंकि डेढ़-दो साल कोविड ने हमारे ऊपर बहुत बड़ा दबाव डाला, लेकिन उसके बावजूद भी 17 वीं लोक सभा देश के लिए बहुत उपकारक रही है, बहुत अच्छे काम किए हैं । लेकिन, इस समय हमने कई साथियों को भी खो दिया । हो सकता है, अगर आज वे हमारे बीच होते तो इस विदाई समारोह में मौजूद होते, लेकिन बीच में ही कोविड के कारण हमें अपने बहुत होनहार साथियों को खोना पड़ा । उसका दु:ख हमेशा-हमेशा हमें रहेगा ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, 17 वीं लोक सभा का यह अंतिम सत्र और अंतिम ऑवर ही समझ लीजिए, है । लोकतंत्र और भारत की यात्रा अनन्त है । यह देश किसी परपज के लिए है, उसका कोई लक्ष्य है, वह पूरी मानव जाति के लिए है । चाहे श्री अरविन्दो ने देखा हो, चाहे स्वामी विवेकानन्द जी ने देखा हो, लेकिन आज उन शब्दों में, उस विजन में सामर्थ्य था, वह हम आंखों के सामने देख पा रहे हैं । दुनिया जिस प्रकार से भारत के महात्म्य को स्वीकार कर रही है, भारत के सामर्थ्य को स्वीकारने लगी है और इस यात्रा को हमें और शक्ति के साथ आगे बढ़ाना है ।

माननीय अध्यक्ष जी, चुनाव बहुत दूर नहीं है । कुछ लोगों को थोड़ी घबराहट रहती होगी, लेकिन यह लोकतंत्र का सहज आवश्यक पहलू है । हम सब उसको गर्व से स्वीकार करते हैं । मुझे विश्वास है कि हमारे चुनाव देश की शान बढ़ाने वाले होंगे । लोकतंत्र की हमारी जो परंपरा है, वह पूरे विश्व को अचम्भित करने वाली अवश्य रहेंगी, मेरा पक्का विश्वास है ।

आदरणीय अध्यक्ष जी, सभी माननीय सांसदों को जो सहयोग मिला है, जो निर्णय हम कर पाए हैं, कभी-कभी हमले भी इतने मजेदार हुए हैं कि हमारे भीतर की शक्ति भी खिल कर निकली है । मेरे ऊपर परमात्मा की कृपा रही है कि मेरे पास जो चुनौती आती है तो आनंद आता है । हर चुनौती का हम सामना कर पाए हैं, बड़े आत्मविश्वास और विश्वास के साथ हम चले हैं ।

आज राम मंदिर को लेकर इस सदन ने जो प्रस्ताव पारित किया है, वह देश की भावी पीढ़ी और देश के मूल्यों पर गर्व करने की संवैधानिक शक्ति देगा । यह सही है कि हर किसी में यह सामर्थ्य नहीं होता है कि ऐसी चीजों में, कोई हिम्मत दिखाता है, कुछ लोग मैदान छोड़ कर भाग जाते हैं लेकिन फिर भी भविष्य के रिकार्ड देखेंगे तो आज व्याख्यान हुए, जो बातें रखी गयीं, उनमें संवेदना भी है, संकल्प भी है, सहानुभूति भी है और सबका साथ, सबका विकास के मंत्र को आगे बढ़ाने का तत्व भी है । इस देश के बुरे दिन कितने ही क्यों न गए हों, हम भावी पीढ़ी के लिए कुछ न कुछ अच्छा करते रहेंगे । यह सदन हमें वह प्रेरणा देता रहेगा । हम सामूहिक संकल्प से, सामूहिक शक्ति से उत्तम से उत्तम परिणाम भारत की नौजवान पीढ़ी की आशा और आकांक्षा के अनुसार करते रहेंगे । इसी विश्वास के साथ एक बार फिर आपका आभार प्रकट करता हूं । सभी माननीय सांसदों का आभार प्रकट करता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

माननीय अध्यक्ष **:** माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं लोक सभा के इस सत्र के साथ इस लोक सभा का आज समापन हो रहा है । सत्रहवीं लोक सभा इसलिए भी विशेष है कि भारत के अमृत काल में हमने संसद के पुराने भवन और नए भवन, दोनों भवनों में अपने संसदीय दायित्वों को निभाया । यह अवसर हमें

मिला, यह अवसर भी हमेशा हमारी जिन्दगी में स्मरणीय रहेगा । नए भवन में स्थापित पवित्र सेंगोल न्याय, सुशासन, राष्ट्रीय एकता और राजनीतिक शुचिता का प्रतीक है । हमारे महान लोकतंत्र की इस उच्चतम संस्था के पीठासीन अधिकारी के रूप में आप सबके सकारात्मक सहयोग से मैंने दायित्व निभाया ।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने अभी हमें बहुत सारी बातें प्रेरणा स्वरूप बतायी । हमारे लिए यह पल ऐतिहासिक पल रहेगा, अद्भुत भी रहेगा । हमारी जिन्दगी भी लोकतंत्र की इस यात्रा के लिए हमेशा स्मृतिपूर्ण वाला काल रहेगा ।

इन पांच वर्षों के अंदर जनता का लोकतंत्र के प्रति, लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति विश्वास बढ़े, इसके लिए सभी माननीय सदस्यों ने अपने क्षेत्र की जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास किया । उन्होंने यहां अपने क्षेत्र के मुद्दे भी उठाए, देश के मुद्दे भी उठाए और मैं सरकार को भी धन्यवाद देता हूं कि सरकार ने पहली बार शून्य काल जैसे विषय का सकारात्मक उत्तर देकर एक नई परंपरा स्थापित की ।

माननीय सदस्यगण, मुझे 19 जून, 2019 को सर्वसम्मति से सभा का अध्यक्ष चुना गया । इसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री का और सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं । मेरे लिए भी ये पांच वर्ष जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं और अविस्मरणीय रहेंगे क्योंकि आपके साथ जो पल मैंने गुजारे हैं, वे मुझे हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे ।

माननीय सदस्यगण, इस सदन की बड़ी उच्च परंपरा और परिपाटियां रही है । इस सदन की प्रतिष्ठा भी रही है । मुझ से पूर्व, यहां बैठने वाले पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने इस सदन की गरिमा, प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा को बढ़ाया है । मैंने भी प्रयास किया है कि सभी दलों के नेताओं के सहयोग से इस पद की गरिमा और इस संस्था की सर्वोच्च प्रतिष्ठा बनी रहे और इसके लिए आपका सहयोग भी रहा, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूं ।

17 वीं लोकसभा का कार्यकाल कई अर्थों में ऐतिहासिक रहा है । सभा के पीठासीन अधिकारी के रूप में जब मुझे दायित्व मिला तो मैंने कोशिश की । मैं सदन में दूसरी बार माननीय सदस्य था, मेरा कोई लंबा अनुभव नहीं था, लेकिन आप सबका सहयोग मिला और पहले सत्र में ही बिना व्यवधान के सदन की प्रोडक्टिविटी भी रही और सभी माननीय सदस्यों ने, विशेष रूप से नए और पुराने 540 सदस्यों ने सत्र के पहले सत्र में ही अपनी भागीदारी निभाई और अपने विचार व्यक्त किए, यह अपने आप में ऐतिहासिक उपलब्धि रहेगी ।

माननीय सदस्यगण, नए संसद भवन की आवश्यकता की बहुत दिनों से लोग चर्चा कर रहे थे । पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने भी इसके लिए प्रयास किया । मैंने और सदन के सभी सदस्यों ने माननीय प्रधान मंत्री जी से संसद के नए भवन बनाने का आग्रह किया । माननीय प्रधान मंत्री जी ने हमारे दोनों सदनों के आग्रह को स्वीकार किया और इसके निर्माण की स्वीकृति दी । माननीय प्रधान मंत्री जी के विज़नरी नेतृत्व, उनकी अद्भुत कार्यशैली और हमारे श्रमवीरों, जिन्होंने कोविड के समय अथक प्रयास किए, इसके कारण हमारा नया संसद भवन दो वर्ष पांच महीने की अल्प अवधि में पूरा हुआ ।

माननीय सदस्यगण, यह कालखंड हमारे लिए बहुत चुनौतीपूर्ण रहा । विशेष रूप से वैश्विक महामारी कोरोना की चुनौती हमारे सामने थी । हमें हमारे संवैधानिक दायित्वों को निभाना था । देश की जनता सुरक्षित रहे, उनके कल्याण में, उनके सहयोग में, हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभाएं । मैं आज यह कह सकता हूं कि सभी माननीय सदस्यों ने उन चुनौतियों के समय में भी देर रात तक बैठकर संवैधानिक दायित्वों को निभाया और 167 परसेंट प्रोडक्टिविटी रही ।

जैसा कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने बताया कि कोरोना काल गंभीर था, लेकिन मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने देश की जनता की भी चिंता की और अपने एक-एक माननीय सदस्यों की भी

चिंता की । जब भी उन्हें जानकारी मिलती थी, वे व्यक्तिगत रूप से टेलीफोन करते थे और उनसे बात हो न हो, लेकिन डॉक्टरों से जरूर चिंता व्यक्त करते थे ।

माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं लोक सभा का यह सत्र अपनी प्रोडक्टिविटी में भी ऐतिहासिक रहा । पिछली पाँच लोक सभा में, सबसे ज्यादा प्रोडक्टिविटी इस लोक सभा में 97 परसेंट रही । इसमें विशेष रूप से महिलाओं की भागीदारी रही है और सदन में उनकी सक्रिय भागीदारी भी रही । मैं देखता था कि देर रात्रि तक महिलाएं यहां बैठती थीं । हमारी माननीय महिला सदस्य यहां बैठती थीं और अपने विचारों को व्यक्त करती थीं । वे अपने क्षेत्र की जनता की भावनाओं को अभिव्यक्त करती थीं ।

माननीय सदस्यगण, यह हमारे लिए गौरव का विषय रहा कि नये संसद भवन के अंदर सर्वप्रथम दिन ही नारी शक्ति वंदन विधेयक, 2023 चर्चा के लिए लाया गया । सभी दलों ने इसमें सहयोग किया और यह विधेयक पारित हुआ । इसके लिए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को भी धन्यवाद देता हूं । यह विधेयक महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक अभूतपूर्व उपलब्धि रहेगी । वर्षों तक इन सदनों में महिला आरक्षण विधेयक की प्रतीक्षा हो रही थी । लेकिन, यह सौभाग्य आपको ही मिला । आपके समय में ही यह महिला विधेयक पारित हुआ ।

इसके अलावा, इस सदन में बहुत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक विधेयक पारित हुए । हम अंग्रेजों के कानूनों को लेकर चल रहे थे । हमने अपनी आजादी के बाद अपने कानून बनाए । भारतीय न्याय संहिता, भारतीय साक्ष्य बिल, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और विशेष रूप से इस सदन ने जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन विधेयक भी पारित किया । उसके साथ-साथ डिजिटल पर्सनल डेटा, मुस्लिम महिला विधेयक, उपभोक्ता संरक्षण विधेयक, प्रत्यक्ष कर विधेयक, औद्योगिक संबंधी विधेयक, ऐसे कई ऐतिहासिक कानून पारित किए गए । आपकी जिन्दगी में भी यह स्मरण रहे कि आपने बहुत ऐतिहासिक विधेयक पारित किये, जिनसे एक लंबे समय तक देश की आर्थिक और समाजिक स्थिति में एक बहुत बड़ा परिवर्तन होगा । यह मौका भी आप सबको, हम सबको मिला है । विगत पांच वर्षों में विशेष रूप से भारतीय चिंतन को और भारतीय चिंतन की व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए कानून पारित किये गये । इस सभा ने पांच वर्षों में, जो बहुत अनुपयोगी कानून थे, उन कानूनों को रिपील करने का काम भी इसी सभा ने किया । इस सभा ने तीन संविधान संशोधन विधेयक भी पारित किये ।

माननीय सदस्यगण, सत्रहवीं लोक सभा का गठन 25 मई, 2019 को किया गया था । इस सदन की पहली बैठक 17 जून, 2019 को हुई थी । सत्रहवीं लोक सभा में कुल मिलाकर 274 बैठकें हुईं, जो 1355 घंटे तक चली । हमने सदन में नियत समय में 346 घंटे की अधिक अवधि में बैठकर कार्य किया । इसी लोक सभा में व्यवधान के कारण 387 घंटे का समय भी व्यर्थ हुआ । इन पांच वर्षों की अवधि में हमने गहन चर्चा और संवाद के बाद 222 कानून पारित किये । इस अवधि के दौरान 202 विधेयक पुर:स्थापित किये गए तथा 11 विधेयकों को सरकार द्वारा वापस लिया गया । सत्रहवीं लोक सभा के दौरान 4,663 तारांकित प्रश्न सूचीगत किये गये, जिनमें से 1,116 प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिये गए । इसी अवधि में 55 हजार 879 अतारांकित प्रश्न भी पूछे गए, जिनके लिखित उत्तर सदन में दिए गए ।

इसी लोक सभा में दो अवसर ऐसे भी आए, जब सूचीबद्ध सभी 20 प्रश्नों के उत्तर दिए गए ।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा में 729 गैर-सरकारी विधेयक सदन में प्रस्तुत किए गए । 17 वीं लोक सभा के दौरान संबंधित मंत्रियों ने 26,750 पत्र सभा पटल पर रखे । इस लोक सभा के दौरान शून्य काल के अंतर्गत 5,568 मामले उठाए गए, जबकि नियम 377 के अंतर्गत माननीय सदस्यों द्वारा 4,869 विषय उठाए गए । दिनांक 18 जुलाई, 2019 को शून्य काल के अंतर्गत 161 विषय उठाए गए और माननीय सदस्यों ने देर रात्रि तक

भागीदारी निभाई । 17 वीं लोक सभा के पहले सत्र में शून्य काल में 1,066 मामले उठाए गए, जिसका अपने आपमें कीर्तिमान है ।

माननीय सदस्यगण, जैसा कि मैंने बताया कि पहली बार नियम 377 और शून्य काल के जवाब यहां पर सही समय पर कार्यपालिका के माध्यम से आए हैं । इसी लोक सभा में चन्द्रयान मिशन की सफलता और अंतरिक्ष के क्षेत्र में देश की उपलब्धियों पर भी चर्चा हुई । सभा द्वारा इस विषय पर संकल्प पारित किया गया । सभा द्वारा ? भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत के लोगों के जीवन पर इसके प्रभाव? विषय पर भी नियम 342 के अंतर्गत चर्चा की गई ।

माननीय सदस्यगण, इसी सदन में माननीय प्रधानमंत्री जी ने 5 फरवरी, 2020 को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की स्थापना की घोषणा की थी । यह देश के लिए गौरव का विषय है कि अब श्रीराम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है । इस विषय पर आज सदन में चर्चा हुई । सभी माननीय सदस्यों ने सार्थक रूप से अपने विचार रखे और चर्चा के उपरांत वर्ष 2047 तक एक विकसित और समावेशी भारत के निर्माण का संकल्प भी हमने पारित किया ।

माननीय मंत्रियों द्वारा विभिन्न विषयों पर 534 वक्तव्य दिए गए । इस लोक सभा के दौरान नियम 193 के अंतर्गत 12 चर्चाएं भी आयोजित की गईं । संसद की स्थायी समितियों ने इस लोक सभा में उत्कृष्ट कार्य करते हुए 691 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए । संसदीय समितियों की 69 प्रतिशत से अधिक सिफारिशों को सरकार द्वारा स्वीकार किया गया ।

माननीय सदस्यगण, माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में जी-20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया । इससे भारत की नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित हुई और उसके बाद जी-20 देशों तथा उनकी संसदों के अध्यक्ष पी-20 का शिखर सम्मेलन भी आयोजित हुआ । इससे विश्व में हमारा लोकतंत्र, हमारे लोकतंत्र की यात्रा सभी अध्यक्षों ने अनुभव की ।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने पी-20 सम्मेलन में संबोधित करते हुए हमारे देश की लोकतंत्र की यात्रा का विजन रखा । उन्होंने लोकतंत्र के साथ हमारी चुनाव प्रणाली और किस तरीके से इस देश में एक निष्पक्ष चुनाव प्रणाली है, उन्होंने आग्रह किया कि सभी लोकतांत्रिक देश यहां के लोकतंत्र के इस पर्व, उत्सव को देखने आएं । किसी लोकतांत्रिक देश की तो उतनी आबादी नहीं होगी, उससे ज्यादा हमारे यहां मतदाता मतदान करते हैं । वे भी अपने आपमें एक प्रेरणा है ।

माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से ही पी-20 सम्मेलन में मिशन लाइफ पर्यावरण के लिए जीवनशैली पर भी संसदीय मंच पर चर्चा हुई, जिसमें प्रकृति के साथ सद्भावना में एक हरित भविष्य के लिए संकल्प लिया गया । इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागी देशों ने समर्थन किया और सभी संसदों के अध्यक्षों ने संकल्प लिया कि हम अपने-अपने देशों के अंदर भी इसी तरीके का संकल्प लेंगे, प्रस्ताव करेंगे और चर्चा करेंगे ।

इस लोक सभा में संविधान दिवस कार्यक्रम वर्ष 2019 और 2021 में संसद भवन में आयोजित किया गया । संसद की लोक लेखा समिति (PAC) की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर केन्द्रीय कक्ष में एक विशेष कार्यक्रम 4 दिसंबर, 2021 को आयोजित किया गया । दिनांक 19 सितंबर, 2023 को संविधान सदन के केन्द्रीय कक्ष में ?संविधान सभा से अब तक 75 वर्षों की संसदीय यात्रा, उपलब्धियां, अनुभव, स्मृतियाँ और सीख? विषय पर एक विशेष चर्चा आयोजित की गई ।

मैं विशेष रूप से माननीय प्रधान मंत्री जी के विज़न के कुछ विषय उठाना चाहता हूं । लोक सभा टीवी चैनल और राज्य सभा टीवी चैनल अलग-अलग चलते थे । माननीय प्रधान मंत्री जी के मार्गदर्शन से संसद टीवी एक चैनल हुआ, जिससे करोड़ों रुपये की वित्तीय बचत भी हुई । इसी तरीके से सब्सिडी का विषय हमेशा हम पर उठता रहता था । अब पूर्ण रूप से सब्सिडी समाप्त कर दी गई, जिससे 15 करोड़ रुपये की वार्षिक बचत हुई । मैं आपको एक उदाहरण पेश करना चाहता हूं । संसद भवन में राष्ट्रीय पर्वों पर लाइट पर लाखों रुपये खर्च होते थे । माननीय प्रधान मंत्री जी का विज़न और मार्गदर्शन था और उन्होंने कहा कि यहां एक फसाड लाइट की तरह परमानेंट लाइट लगनी चाहिए । यहां पर फसाड लाइट लगी और कम समय में लगी तथा इस संसद के लाखों करोड़ रुपये की बचत हुई, जो 75 वें वर्ष से अभी तक लग रही हैं । इन सभी व्यवस्थाओं से इन पांच वर्षों के अंदर लगभग 875 करोड़ रुपये की बचत की गई, जो बजट का 23 प्रतिशत हिस्सा है ।

कोरोना के समय माननीय सांसदों ने पीएम केयर्स फण्ड में अपने फण्ड को दिया और अपनी सांसद निधि को भी छोड़ा । मैं उसके लिए भी सांसदों को धन्यवाद देता हूं । यहां पर इस पूरे परिसर को हरा-भरा बनाने के लिए सभी माननीय सदस्यों ने अपने-अपने नाम का वृक्षारोपण किया, जो हमेशा उनकी जिंदगी में स्मृति रहेगी । वे जब भी आएंगे, अपने पेड़ को बड़ा होते देखेंगे तो याद करेंगे ।

माननीय सदस्यगण, सभी विधेयकों पर सार्थक वाद विवाद और चर्चा हुई और सभी ने इन पर ठीक से अपने विचार रखे । हमने कुछ नए प्रयास किए कि विधेयक से पहले माननीय सदस्यों को ब्रीफिंग सेशन के माध्यम से विधेयकों की जानकारी, उद्देश्य और विधेयकों के प्रभाव के बारे में लगातार कार्यक्रम आयोजित किए गए । कई माननीय सदस्यों को जानकारी होगी कि यहां पर किसी भी विधेयक या किसी भी विषय पर माननीय सदस्यों को 24 घण्टे शोध सहायता उपलब्ध रहती है । हमने इसी के साथ-साथ नई व्यवस्था शुरू की कि लाइब्रेरी की सामग्री होम डिलीवरी हो और सारी लाइब्रेरी के डिजिटाइजेशन का काम किया । अभी तक संसद की जितनी भी डिबेट्स हैं, उन सारी डिबेट्स के डिजिटाइजेशन का काम किया गया । मेटा डेटा, सब्जेक्ट, नाम और विषय से आप पूरी डिबेट को देख सकते हैं । यह भी नवाचार इस संसद ने किया । समृद्ध लाइब्रेरी को जनता के लिए सुलभ कर दिया है ।

आप सबके प्रयासों के सहयोग से यह सदन पेपरलैस हो चुका है । अभी 97 प्रतिशत से अधिक प्रश्न इलेक्ट्रॉनिक रूप से माननीय सदस्यों के द्वारा लगाए जाते हैं । इसी के साथ संसद के नए भवन में हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा दस अन्य भारतीय भाषाओं में भाषांतरण सेवा उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया गया है । इसी के साथ-साथ हमने डिजिटल एप, डिजिटल संसद और आप जो अपनी बात कहते हैं, उसको आधे घण्टे में वाट्स ऐप पर आपके मोबाइल पर उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया गया है ।

18.00 hrs

माननीय सदस्यगण, आवास बहुत पुराने हो गए थे । माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक मार्गदर्शन दिया और अभी 112 नये आवास बनकर तैयार हो गए हैं और 184 आवासों का निर्माण कार्य चल रहा है ताकि जब हमारे माननीय सदस्य आएं तो उनको नये आवास मिलें, इसका भी एक प्रयास किया गया ।

माननीय सदस्यगण, लोकतंत्र में युवाओं की भागीदारी रहे और हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे देश की आजादी, आजादी के बाद जिन नेताओं का योगदान रहा, उनके बारे में जानें, उनके जीवन के बारे में जानें, इसके लिए माननीय प्रधान मंत्री जी के मार्गदर्शन में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया । हर महान विभूति और स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया जाता है । संविधान सदन में देश भर के अलग-अलग राज्यों के

लोग अपने-अपने राज्यों में पहले उन महापुरुषों पर चर्चा करते हैं और जब उसमें उत्तीर्ण होते हैं, तब वे संसद भवन में आकर अपनी बात को रखते हैं, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे महापुरुषों के बारे में जानें । उनके राष्ट्र और देश के प्रति कर्तव्य के बारे में जाने ताकि उन्हें भी नई प्रेरणा मिले ।

माननीय सदस्यगण, लोक सभा का पीठासीन अधिकारी होने के नाते छह पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन हुए और हमने प्रयास किया कि देश की सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं में चाहे विधान सभा हो या लोक सभा हो, उनमें शब्दों की प्रतिष्ठा बने, गरिमा बने और हमारे सदस्यों का आचरण, व्यवहार ऐसा हो, ताकि लोगों का लोकतंत्र में और लोकतांत्रिक संस्थाओं में ज्यादा विश्वास और भरोसा बढ़े । इसके लिए सबने एक मत से इस बात पर विचार किया कि सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हम सभी सदस्यों को इस तरह का व्यवहार करना चाहिए कि जनता का विश्वास हमारी संस्थाओं पर ज्यादा बने और हम ज्यादा मर्यादित तरीके से संस्थाओं के माध्यम से लोगों का कल्याण कर सकें । माननीय प्रधान मंत्री जी ने एक नया विजनरी मार्गदर्शन उस समय दिया - ?वन नेशन, वन लेजिस्लेशन प्लेटफार्म ।? आज हम यह कह सकते हैं कि पूरे देश की विधान सभाओं की जो भी डिबेट, चर्चा, बजट और लोक सभा तथा राज्य सभा की जितनी भी कार्यवाहियां हैं, आने वाले समय में एक प्लेटफार्म पर आप देख पाएंगे, यह भी एक नया प्रयास किया गया है ।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा के दौरान भारत में 16 देशों के संसदीय शिष्ट मंडल का आना हुआ और 42 शिष्ट मंडल भारत से अन्य कई देशों की यात्रा पर गए । इससे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हमारी भागीदारी बढ़ी है । अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कई संस्थाओं के अंदर हमारी भागीदारी भी बढ़ी है और माननीय सदस्यगण कई कमेटियों में सदस्य के रूप में निर्वाचित भी हुए और मनोनीत भी हुए । इससे वैश्विक स्तर पर भारत की शक्ति और प्रतिष्ठा बढ़ी है ।

माननीय सदस्यगण, आप सबका मुझे बहुत सहयोग मिला, सकारात्मक सहयोग मिला । माननीय प्रधान मंत्री जी का मिला । सभी दल के नेताओं का मिला और मैंने कोशिश की कि इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनी रहे । सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा को बनाने में मुझे कुछ कठोर निर्णय भी करने पड़े । लेकिन कठोर निर्णय करते समय मैं कभी इस मत का नहीं था कि मुझे किसी सदस्य पर कार्रवाई करनी पड़े । भविष्य में हम नये सदन के साथ इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए और प्रयास करेंगे । हमारी प्रोडक्टिविटी 97 प्रतिशत नहीं, बल्कि हमारी प्रोडक्टिविटी हमेशा सौ प्रतिशत से ऊपर हो । हमारा आचरण और व्यवहार सही हो । असहमति और सहमति हमारे लोकतंत्र की ताकत है । यह होना भी चाहिए । अलग-अलग विचार वाले दलों से लोग चुनकर आते हैं, लेकिन सदन की गरिमा बनी रहे, यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी है और मैं आशा करता हूं कि आने वाले समय में हम इसके लिए प्रयास करेंगे ।

यहां पर सभी सदस्य अलग-अलग दलों से, अलग-अलग विचारधारा से तथा अलग-अलग क्षेत्रों से आते हैं, लेकिन इन पांच सालों में मुझे सब एक परिवार जैसे लगे । मुझे एक ऐसा परिवार लगा, जो हमेशा मेरे जीवन में अविस्मरणीय रहेगा । मेरे सभी सदस्यों से एक परिवार जैसे संबंध रहे । मुझे आत्मिक भाव मिला । न पक्ष, न विपक्ष, सब मेरे लिए सदस्य हैं । मैंने सभी सदस्यों का मान-सम्मान बनाने का प्रयास किया है । मुझे कुछ कटुता के निर्णय भी लेने पड़े, लेकिन वे सदन की गरिमा और सदन की प्रतिष्ठा के लिए लेने पड़े ।

आज जब हम लोक सभा की समाप्ति पर जा रहे हैं तो हम अपने-अपने लोक सभा क्षेत्र में जाएंगे और हमने अपने सार्वजनिक जीवन में संसद के अंदर जिन अनुभवों को प्राप्त किया है, भारत के लोकतंत्र की समृद्धि और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए जो सहयोग किया है, उसकी जानकारी हम जनता को देंगे । इसके अलावा हमने जो मुद्दे

उठाए, उन मुद्दों को किस सकारात्मक रूप से सरकार ने लिया और किस सकारात्मक रूप से उन मुद्दों का हल निकाला, उसके लिए मैं सरकार को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ ।

मैं माननीय उपराष्ट्रपति जी को धन्यवाद देता हूँ, जिनका मुझे हमेशा सकारात्मक सहयोग मिलता रहा है । मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ, जिनका मुझे हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहा और उन्होंने हमेशा एक कोशिश की कि सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनी रहे । लोकतंत्र के अंदर भारत की जो प्रतिष्ठा है, वह दुनिया के लिए मार्गदर्शन है और उन्होंने हमेशा यही मार्गदर्शन किया कि संसद की प्रतिष्ठा बनी रहनी चाहिए, मर्यादा बनी रहनी चाहिए । व्यक्ति आएंगे, चले जाएंगे, लेकिन सदन और सदन की पीठ की मर्यादा बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन मुझे हमेशा मिलता रहा, इसके लिए मैं प्रधान मंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ ।

मैं सभी चेयरपर्सन्स को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने यहां पर बहुत देर तक बैठकर सदन की कार्यवाही को चलाया । मैं संसदीय कार्य मंत्री, संसदीय राज्य मंत्री, मंत्री परिषद् के सभी माननीय सदस्यों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सदन चलाने में सकारात्मक सहयोग दिया ।

मैं प्रेस और मीडिया के मित्रों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सदन की बात को जनता तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । मैं सभा को प्रदान की गई समर्पित त्वरित सेवा के लिए हमारे ऊर्जावान लोक सभा के महासचिव, अधिकारियों और कर्मचारियों की भी सराहना करता हूँ, जिन्होंने देर रात्रि तक बैठकर सदन के संचालन में सहयोग किया ।

मैं परिसर में हमारे सिक्योरिटी से लेकर तमाम लोगों को, छोटे से छोटे श्रमवीरों को, जो देर रात्रि तक यहां पर रुकते थे और हमारे माननीय सदस्यों का सहयोग करते थे, उन सबका भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ । मैं सभा की कार्यवाही के संचालन में समस्त एजेंसियों को, उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के लिए भी धन्यवाद देता हूँ ।

अलग-अलग दल के नेताओं ने इस संसदीय पीठ के लिए और मेरे लिए जो विचार व्यक्त किए हैं, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ । मुझे आशा है कि हम सबका भावी जीवन समृद्ध हो, स्वस्थ रहे, कुशल रहे और हम इसी तरीके से लोकतंत्र के मूल्यों का संवर्द्धन करने में अपना जीवन समर्पित करें और हमने यहां पर जो अनुभव प्राप्त किया है, उस अनुभव का लाभ देश की जनता को मिले । हमारे प्रयासों से हम समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन को बदलने के लिए हमारी जिंदगी को लगातार इसी तरीके से समर्पित करते रहे और सेवा देते रहे ।

मैं आप सबको पुन: बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ । अब मैं वंदे मातरम् के लिए आग्रह करता हूँ ।

_____

18.09 hrs

NATIONAL SONG

The National Song was played.

_____

माननीय अध्यक्ष *:* सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की जाती है ।

18.10 hrs

The Lok Sabha then adjourned sine die.

_____

INTERNET

The Original Version of Lok Sabha proceedings is available on Parliament of India Website and Lok Sabha Website at the following address :

www.sansad.in/ls

LIVE TELECAST OF PROCEEDINGS OF LOK SABHA

Lok Sabha proceedings are being telecast live on Sansad T.V. Channel. Live telecast begins at 11 A.M. everyday the Lok Sabha sits, till the adjournment of the House.

Published under Rules 379 and 382 of the Rules of Procedure and Conduct of Business

in Lok Sabha (Sixteenth Edition)

* Not recorded.

?. English translation of this part of the speech originally delivered in Marathi.

?. English translation of this part of the speech originally delivered in Marathi.

*?.**** English translation of this part of the speech originally delivered in Odia.